चकमक

अप्रैल 2006

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00

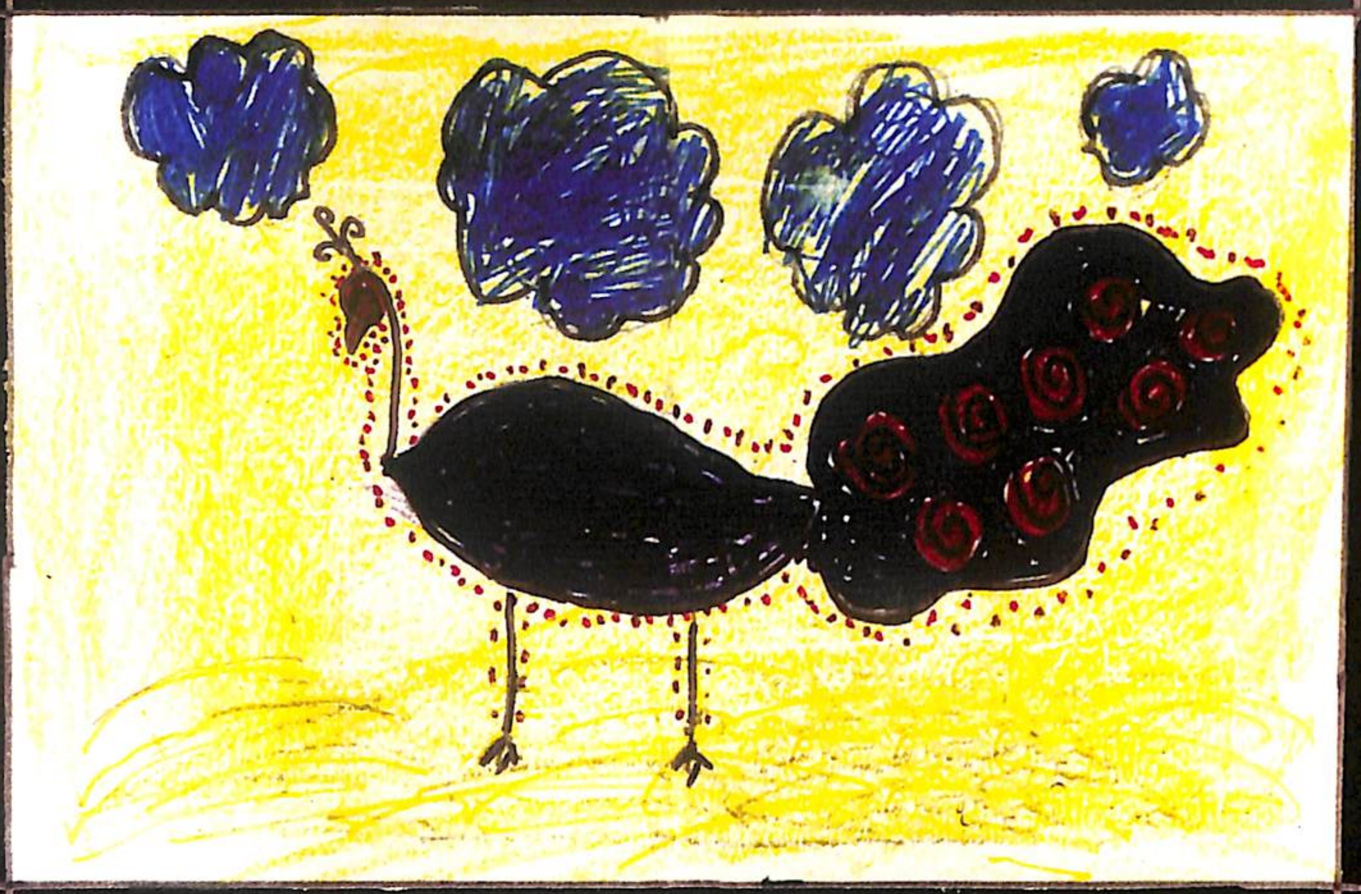

आरती, तीसरी, औरंगाबाद, महाराष्ट्र

रफीक (पता नहीं लिखा)

क्या क्या है इस अंक में

लेख

क्यों डूबा - क्यों तैरा	10
डॉ. बी.आर. अम्बेडकर	23
ई-पेपर	30
चीता	39

कहानी

नटखट बछड़ा	14
अनोखी अल्पना	19
हाथी का वज़न	36

कविता

चला चाँद से	3
गप्प सुनो भई गप्प	18

पुस्तक अंश

करुक्कु	23

हमेशा की तरह

इस बार की बात	2
मेरा पन्ना	4
प्रयोगशाला	16
माथापच्ची	26
जीना इसी का नाम है	28
तुम भी बनाओ	32
सारेगामा	33
चित्र पहेली	34

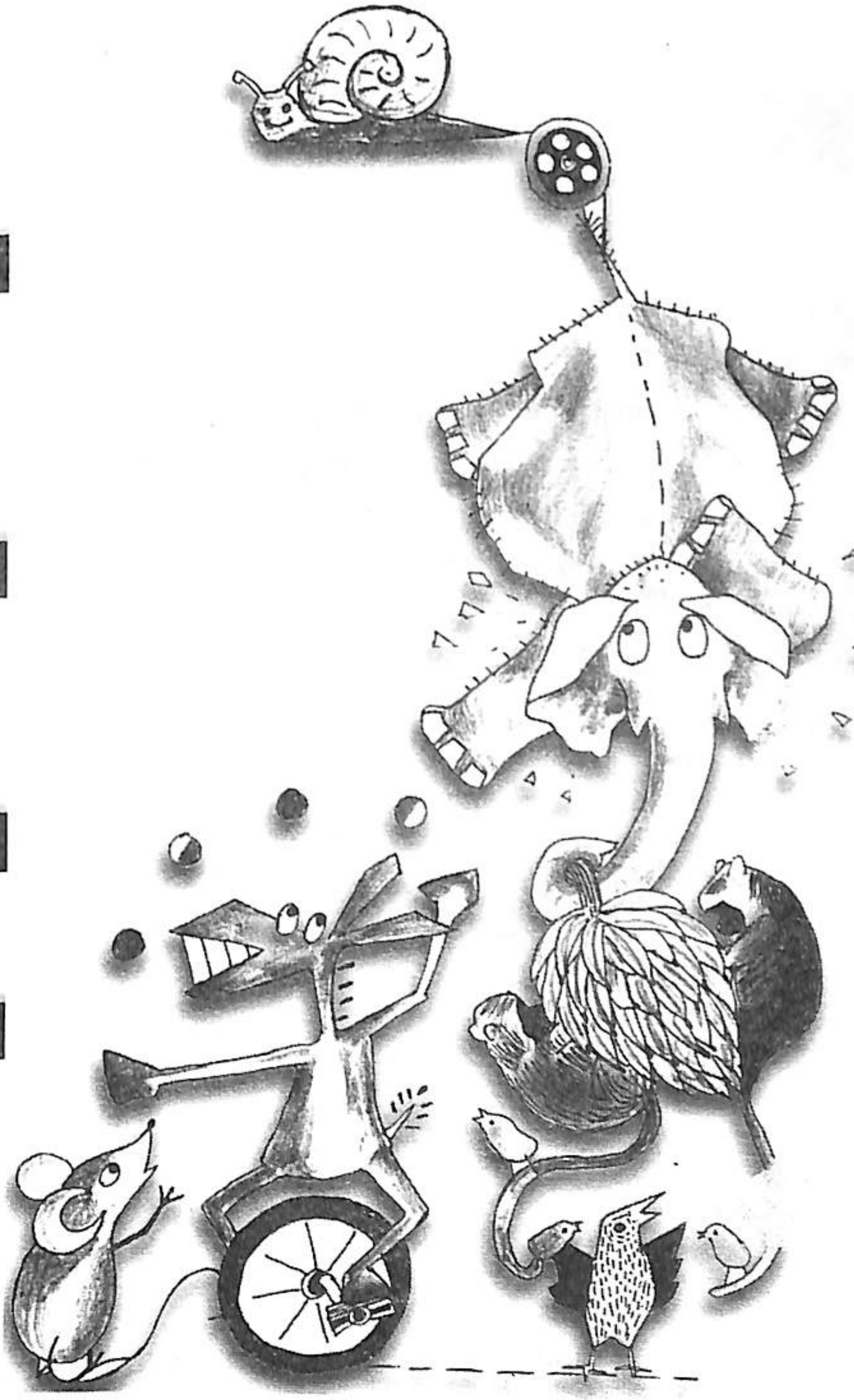

अपनी बात...

दोस्तो,

गर्मियाँ ज़ोर पकड़ने लगीं हैं पर छुट्टियाँ अभी लगी नहीं। किसी की परीक्षाएँ चल रही हैं तो किसी को अपने रिज़ल्ट का इन्तज़ार है।

इस महीने में अम्बेडकर जयंती मनाई जाती है जिसे लाखों दलित मनाते हैं। इस बार हम बराबरी के हक की लड़ाई में अम्बेडकर भूमिका के बारे में एक कहानी दे रहे हैं।

अम्बेडकर महार जाति के थे जिन्हें अछूत माना जाता था। एक बार उन्होंने स्कूल की टंकी से पानी पी लिया था तो सवर्णों ने उनकी पिटाई कर दी थी।

शायद तभी से उनके लिए पानी छुआछूत और गैर-बराबरी का एक प्रतीक बन गया था। अम्बेडकर के नेतृत्व में दलितों का पहला संघर्ष महाड़ के चवदार तलाब पर सार्वजनिक हक जताने का था। इसी संघर्ष की कहानी इस चकमक में है।

स्वतंत्र भारत में अस्पृष्यता (अछूतपन) के विरुद्ध कई कानून हैं। जाति के आधार पर किसी को शिक्षा या अन्य सुविधाओं से दूर रखना कानूनन अपराध है। फिर भी क्या हम वास्तव में कह सकते हैं कि सभी को बराबरी के अधिकार हैं? क्या तुम अपने आसपास इस तरह के व्यवहार को रोकने की कोशिश कर सकते हो?

इस बार हम प्रोफेसर कृष्ण कुमार की एक कहानी दे रहे हैं। यह पांडीचेरी की एक बच्ची के बारे में है। देश के बच्चों के लिए अच्छी पाठ्यपुस्तकें बनवाने की कवायद से समय निकालकर उन्होंने तुम्हारे लिए यह कहानी लिखी है। आशा है तुम्हें पसन्द आएगी।

और हर बार की तरह कुछ मज़ेदार कविताएँ और कहानियाँ भी - हाँ, डब्बूजी के साथ तुम्हारी मुलाकात भी जारी रहेगी। इसके लिए हम आबिद जी के शुक्रगुज़ार हैं।

तुम्हारी

अंजली नरोन्हा

चकमक

मासिक बाल विज्ञान पत्रिका

वर्ष 21, अंक-9, अप्रैल 2006

सम्पादन
विनोद रायना
अंजलि नरोना
स्वयं प्रकाश
सुशील शुक्ल

विज्ञान परामर्श
सुशील जोशी

सज्जा
राकेश खत्री

वितरण
कमल सिंह
अनिल लोखण्डे
मनोज निगम

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता

एकलव्य
ई-7/एचआईजी-453,
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल-462 016 (म.प्र.)
फोन - 2463380
eklavyamp@mantrafreenet.com

चंदे की दरें

एक प्रति	:	10.00 रुपए
छमाही	:	50.00 रुपए
वार्षिक	:	100.00 रुपए
दो साल	:	180.00 रुपए
आजीवन	:	1000.00 रुपए

सभी में डाक खर्च हम देंगे।

चंदा, मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चैक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चैक में बैक चार्ज 30.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

चला चाँद से

• बानरेंद्र

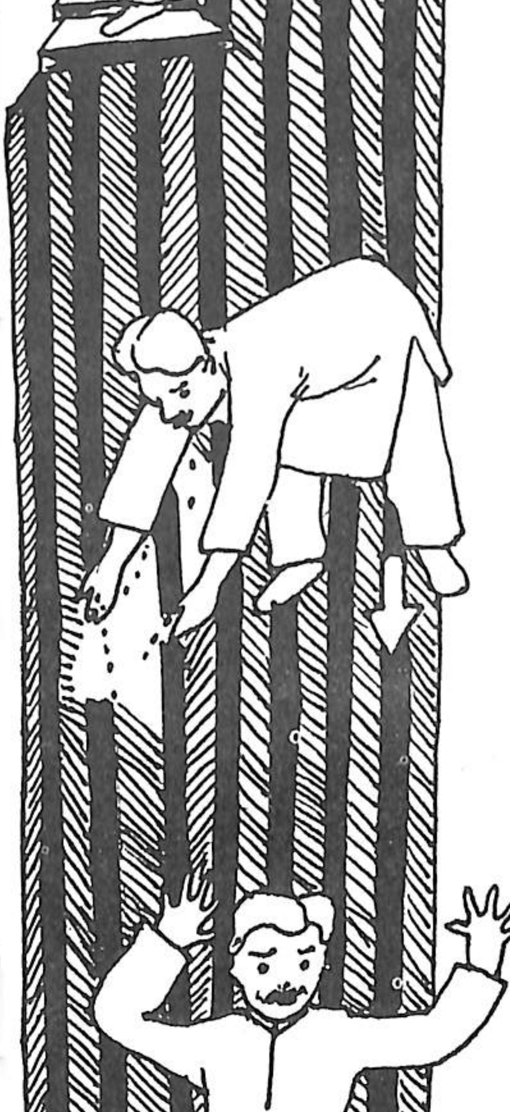

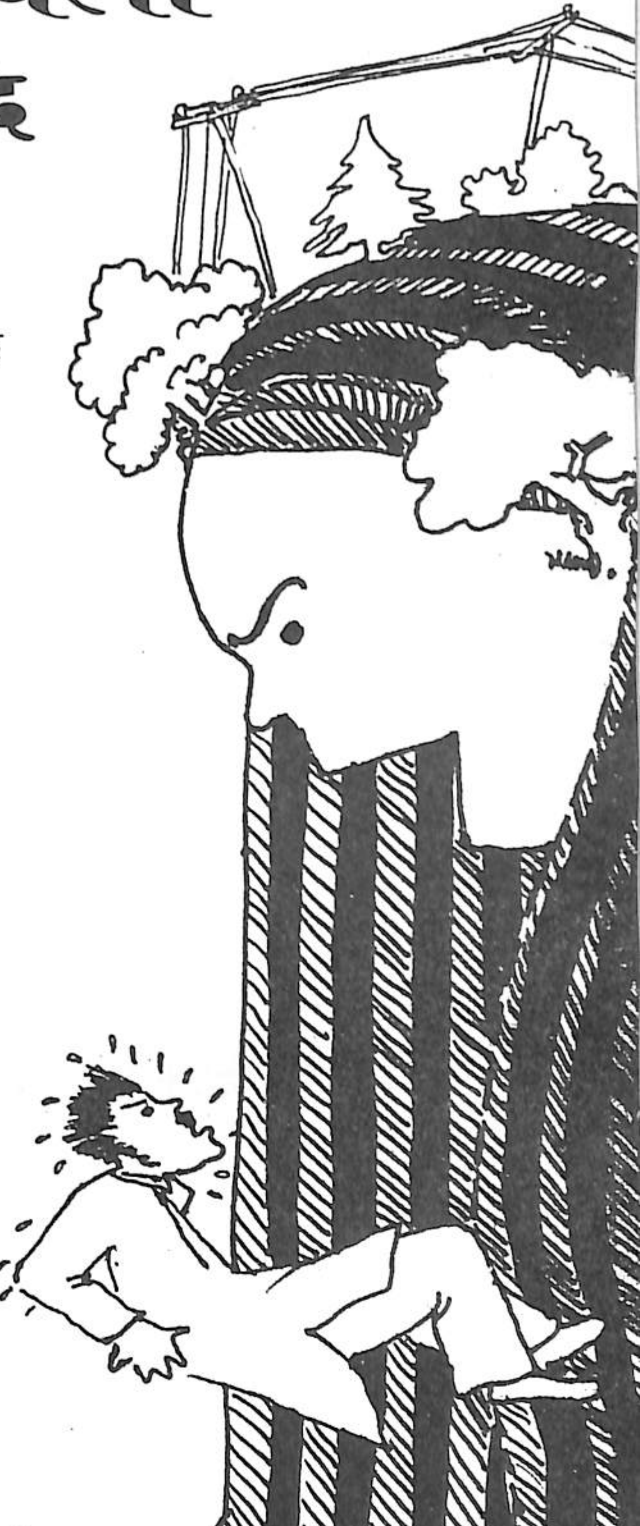

चला चाँद से चँदू बनिया
पहने अचकन और सुथनिया।
बनकर पूरा छैल चिकनिया
बोने को धरती पर धनिया।

उसने बोया खेत निपनिया
उसमें उगा न एको धनिया।
बाँका तिरछा छैल चिकनिया
पहने अचकन और सुथनिया

लगा सोचने चँदू बनिया
कैसे उगा न मेरा धनिया।

धरती बोली - सुन रे बनिया
बनकर पूरे छैल चिकनिया।
बोये हो तुम खेत निपनिया
कैसे उपजे उसमें धनिया।

चित्र- विप्लव शशि

अनु बिल्ली

एक दिन मैं पानी लेने गया तो जब मैं वापिस आया तो देखा कि एक बिल्ली का बच्चा दूध पी रहा था। जब मैंने उसको देखा तो फिर वह डर के भाग गया। फिर वह अगले दिन आया। जब मैं और मेरे चाचा खाना खा रहे थे, हमने थोड़ा-सा रोटी का टुकड़ा दिया। फिर हमने उसका नाम अनु रख दिया। वह बहुत प्यारी थी। मैं उससे डरता था। एक दिन जब मैंने उसको छुआ तो मैं उससे नहीं डरा। एक दिन हमारे पड़ोसी अतुल, शुभम और मेरी बहन ने उसे दूध पिलाया। वह कहीं भी सोती थी। एक दिन जब हम बाहर गए तो कुछ कुत्ते हमारे पीछे पड़े और तभी अनु बिल्ली आई और कुत्ते उसके पीछे पड़ गए। अनु बिल्ली उन्हें चकमा देकर भाग गई। हमारे सुभाष सर ने उसे बहुत प्यार किया और बहुत-सी चीज़ें खिलाईं। मेरी मम्मी उसे मारती थी लेकिन तब भी वह हमारी प्यारी बिल्ली थी। हमारा पड़ोसी उत्सव उससे डरता था। फिर वह अचानक कहीं चली गई। हम उसे कभी नहीं भूलेंगे। प्यारी अनु बिल्ली।

- आशीष तिवारी, पाँचवीं, दिल्ली

- विवेक गौर, चार वर्ष, भोपाल, म.प्र.

ये तीन कविताएँ हमने 'अमन की तस्वीरें' नाम की एक किताब से ली हैं। इस किताब में पाकिस्तान में रह रहे बच्चों की चुनिंदा कविताएँ छपी हैं। इस किताब को 'बुक्स फॉर चेंज' ने प्रकाशित किया है। यह किताब 'मानवाधिकार शिक्षा कार्यक्रम अभियान' के तहत इकट्ठा की गई हैं। इस अभियान में पाकिस्तान के कुल 384 स्कूलों के बच्चों ने चौबीस लाख से ज्यादा कविताएँ भेजीं। इस अभियान की थीम थी 'अमन'। और इस कार्यक्रम का नारा था ... अमन आएगा टुकड़े-टुकड़े
जोड़ सकते हो क्या तुम भी एक टुकड़ा?

क्यों लगे हम लड़ने?

क्यों लगे हम लड़ने?
जबकि आसमाँ में उजाला है
और ज़िन्दगी में मस्ती है
फूल हैं, नदियाँ हैं, सूरज है
परिन्दों को दें उड़ने
दूर ऊपर आसमाँ में
उन्हें पकड़ें नहीं, कभी नहीं
ताकि अमन सदा के लिए रह जाए यहीं

निमरा बिन्ते खालिद, पाँचवीं, पाकिस्तान

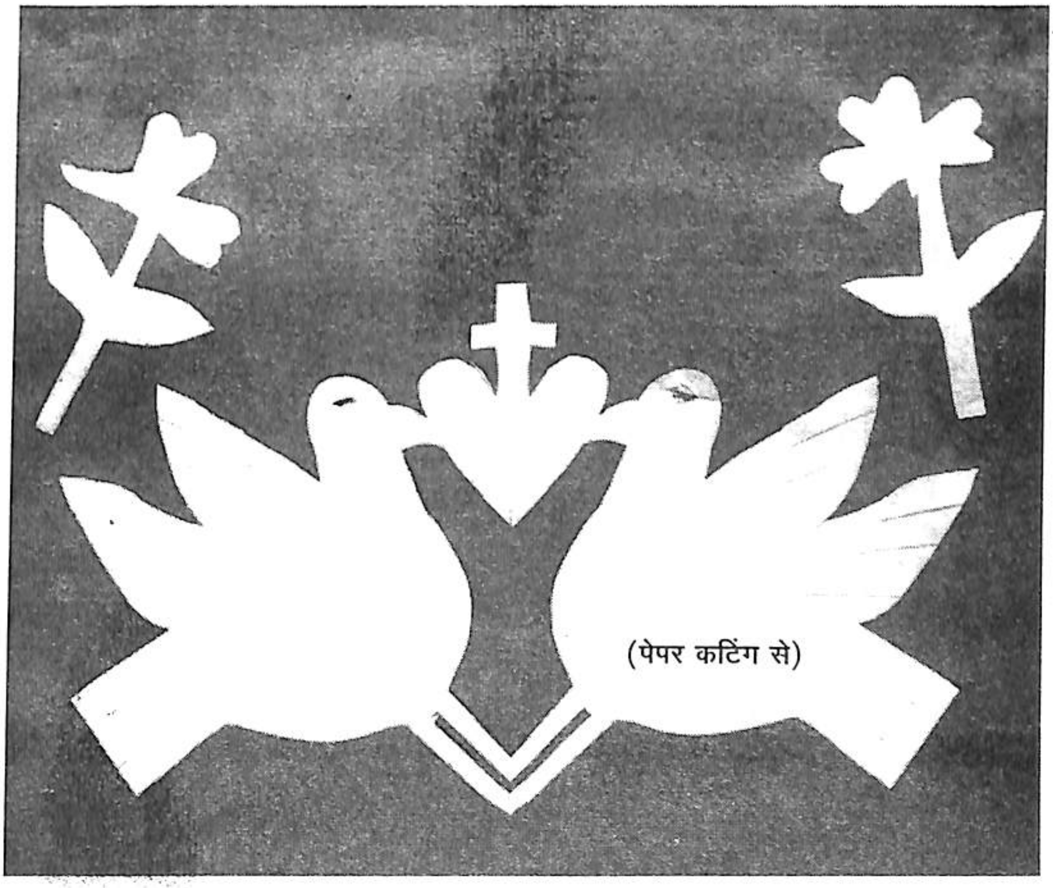

(पेपर कटिंग से)

प्रिया शर्मा, सातवीं

नील नदी-सी लम्बी इक मुस्कान

अमन-चैन हो जब दुनिया पर छा जाती है
नील नदी सी लम्बी इक मुस्कान
भर जाता जीवन खुशियों से
कोई नहीं रह जाता म्लान
देखते हैं हम चिड़ियों को चहचहाते
घंटियों को टनटनाते
ऊँचे आकाश में चंदा के संग
तारे भी टिमटिमाते
न कोई डर
न एक आँसू
जब हो चारों ओर अमन
खुशी से भर जाता हर मन
इस दुनिया पर छा जाती है
नील नदी-सी लम्बी इक मुस्कान

आलिया हुसनैन, पाँचवीं, नज़ीमाबाद, पाकिस्तान

राहुल सिंह, तीसरी, डिब्रुगढ़, असम

घिर गए हैं हम नफ़रत और जंग से

घिर गए हैं हम नफ़रत और जंग से
छोटी-सी बात बढ़ने में देर नहीं लगती
जब बड़ी उम्र के लोग हैं उतारू लड़ने के लिए
बिना सोचे कि सही करते हैं वो या गलती
यह ज़रूरी है कि हम बच्चे एक हो जाएँ
सबको इस दुर्दशा से खींच बाहर आएँ
बीत गए कितने ही बरस
आँखों से आँसू बरसते बम और बन्दूक
उनके प्यारों को वापस नहीं लाने वाले
कोशिश करनी है हमें फिर से अमन लाने की
फिर से हँसी और खुशी पाने की।

अमरीना जुल्फ़िकार, सातवीं, गोंडन, पाकिस्तान

सपना

सपनों की दुनिया में,
मिली मुझे एक सोनपरी।

मैंने उसके साथ जाकर,
परी देश की सैर करी।

गई मैं उसके महल,
जो दिखता था ताज महल।

जगमग-जगमग कोना-कोना,
परियों की थी चहल-पहल।

शर्बत की थी नदियाँ, झरने,
चॉकलेट की अनेक फुलवारी।

केक के थे पहाड़ बड़े,
गूँज रही परियों की किलकारी।

खूब खाए चॉकलेट केक,
खेलते-खेलते गिर पड़ी।

फिर खुल गई मेरी आँखें,
ज्यों मम्मी की डाँट पड़ी।

आयूषी सिंह, पाँचवी, भोपाल

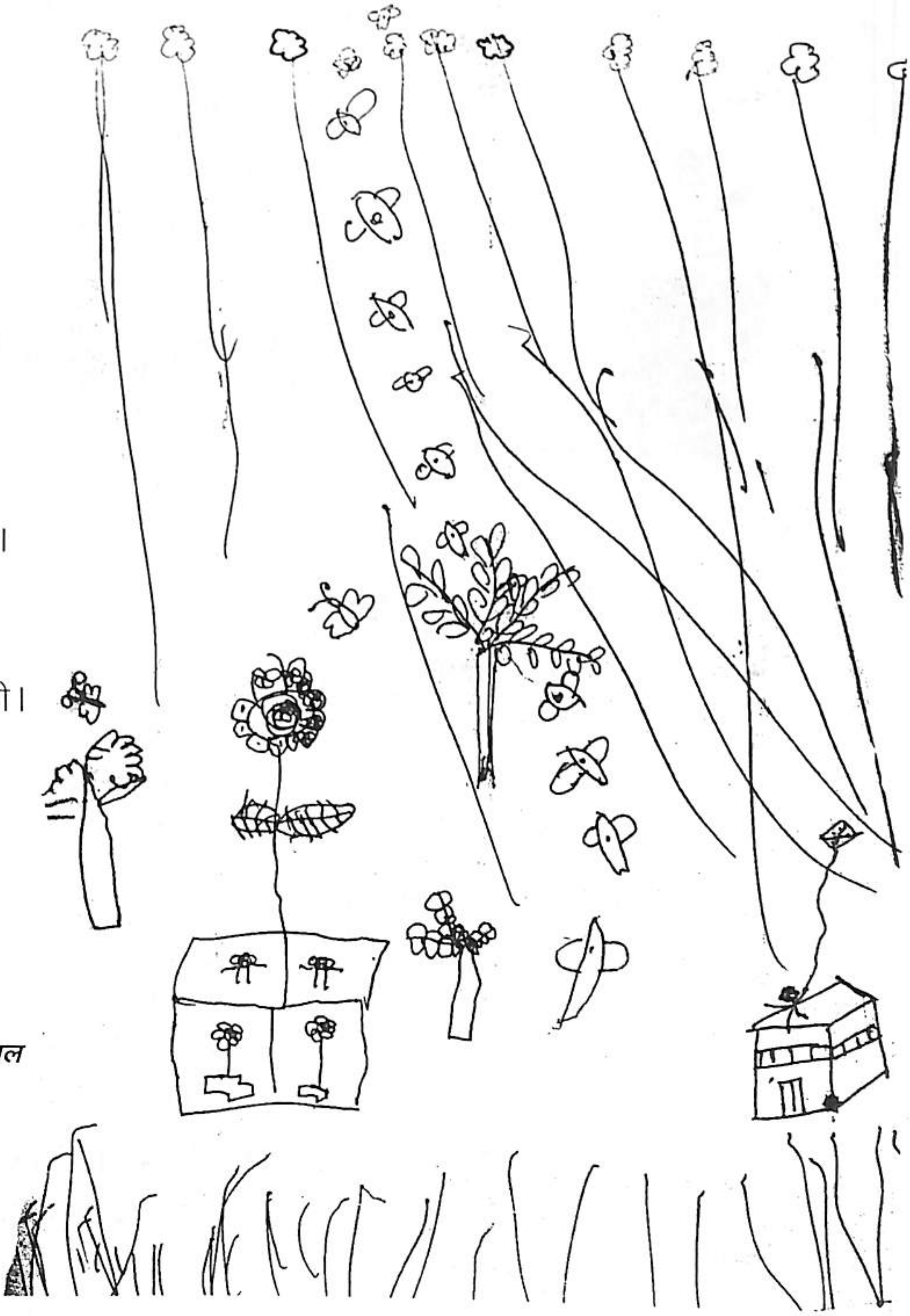

विभू, पाँच वर्ष, होशंगाबाद, म.प्र.

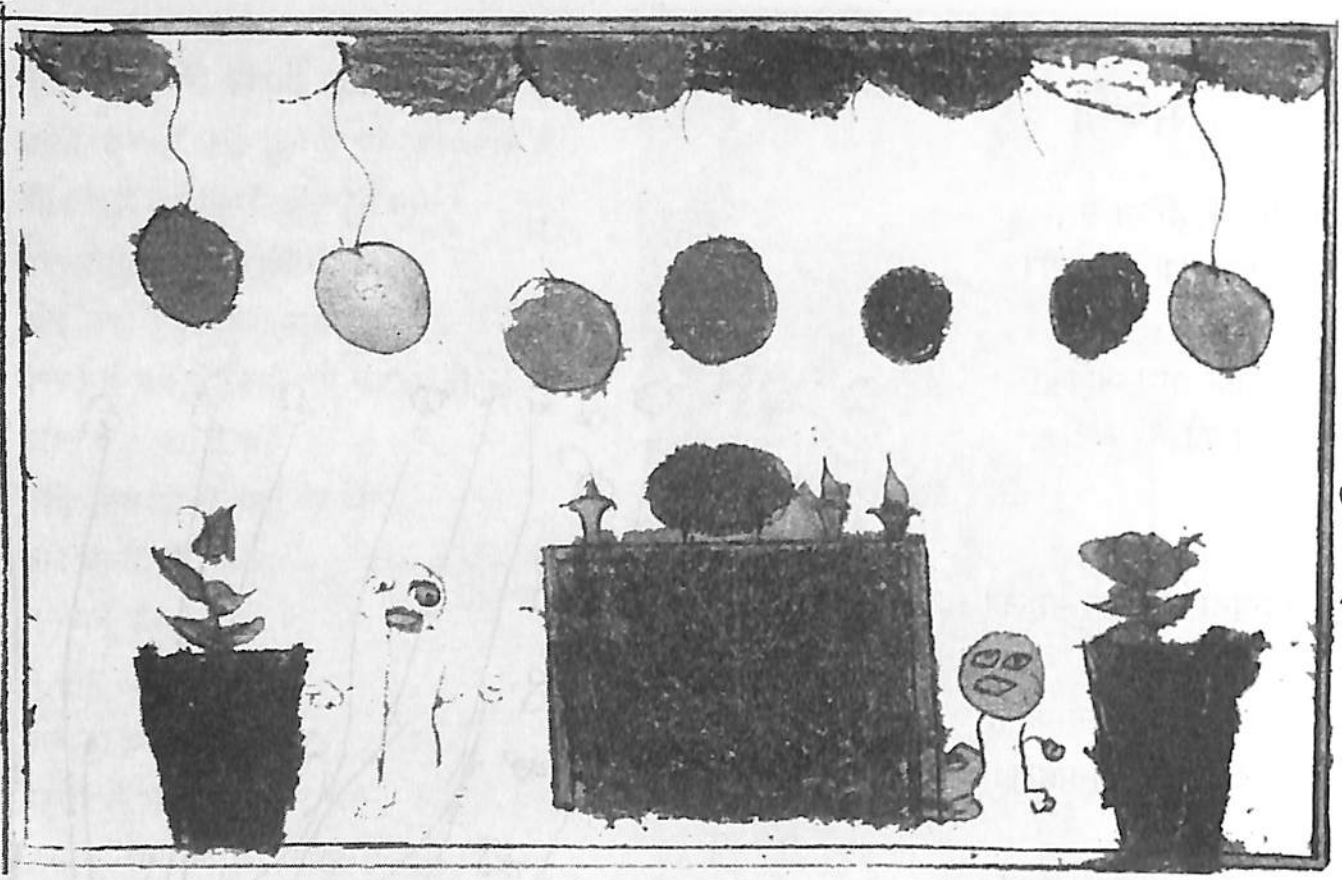

संजय जलखेड़िया, पाँचवीं

खेले चप्पल से

एक बार हम स्कूल से घर जा रहे थे। हम खुटवासा से हिरणखेड़ा पढ़ने आते हैं तो रास्ते में नहर चल रही थी। वहाँ से पाइप में से पानी निकल रहा था। हमने सोचा कि कुछ खेल खेलें। हमें तरकीब सूझी। हमने बारी बारी से चप्पल पाइप में डालीं। सबसे पहले बारी आई पिंकी की। पिंकी ने चप्पल डाली। चप्पल पाइप में से बाहर आ गई। अब मेरी बारी आई। मैंने चप्पल डाली मेरी चप्पल भी हीट आई। फिर शिखा ने डाली। शिखा की चप्पल भी हीट आई। फिर गायत्री की बारी आई। गायत्री की चप्पल अटक गई। गायत्री रोने लगी। फिर मेरी बहन शिखा ने बहुत बहाव लगाए। तब जाके गायत्री की चप्पल हीटी। गायत्री खुश हुई। हम घर आ गए।

स्वाति राजपूत,खटवासा, होशंगाबाद, म.प्र.

एक सैर रणथंभौर

बात उन दिनों की है कि जब मैं आठवीं कक्षा में पढ़ता था। उस समय सर्दियों की छुट्टियों में कक्षा नौ के छात्र-छात्राओं को रणथंभौर ले जाने का कार्यक्रम बनाया गया। कुल पचास लड़कों को जाना था, लेकिन लड़के कम पड़ गए और फिर आठवीं कक्षा के हम जैसै लड़कों को भी जाने का मौका मिल गया। इस बात से मैं बहुत प्रसन्न था।

जाने के पहले फॉर्म और पैसे भरने जैसी औपचारिकताएँ पूरी की गईं। उन दिनों मेरी तबीयत कुछ नाज़ुक चल रही थी। पर किसी तरह मैंने माता-पिता और डॉक्टर को राज़ी कर लिया था। स्कूल से सब लड़के बस से नई दिल्ली रेलवे स्टेशन पहुँचे और वहाँ से सवाई माधोपुर के लिए ट्रेन में सवार हो गए। रणथंभौर जाने के लिए सवाई माधोपुर स्टेशन पर उतरना पड़ता है।

सवाई माधोपुर से हमारा रणथंभौर का सफर शुरू हुआ। रणथंभौर राष्ट्रीय वन्य जीव उद्यान के लिए जाना जाता है। यहाँ एक पुराना किला भी है जो ऊँची पहाड़ी पर बना है। यह किला दसवीं शताब्दी में बनाया गया था। अब तो इस किले के अवशेष ही बचे हैं।

हम पहाड़ के ऊपर बने एक मंदिर को देखने गए। यहाँ हिन्दू-जैन मंदिर और फकीर की दरगाह है। यहाँ का गणेश मंदिर प्रसिद्ध है। यहाँ हर साल मेला लगता है। लोग किले की पैदल परिक्रमा करते हैं। मंदिर देखने के बाद हम नीचे आए। नीचे बहुत सारे लंगूर थे। लोगों को देखते ही वे यहाँ-वहाँ उछलने लगे। हम लोगों को बहुत मज़ा आया।

दोपहर बाद हम राष्ट्रीय वन्य जीव उद्यान के लिए निकले। हमने दो खुली जिप्सी लीं। चालक ने बताया कि यहाँ 30 से ज़्यादा खुली जिप्सी और 15 केंटर हैं जो पर्यटकों को घुमाने का काम करते हैं। बरसात के तीन महीने यह इलाका बंद रहता है। जंगल का 35 किलोमीटर का रास्ता वाहन तीन घण्टे में पूरा करते हैं। हम उद्यान के अंदर गए। अंदर जाते ही हमने चीतल और सांभर देखे। असल में हम यहाँ बाघ देखने आए थे, लेकिन बाघ कहीं दिखायी ही नहीं दिया। उद्यान में खेजड़ा, तेंदू, बेर, बाँस, पीपल, बड़, जामुन और कदम आदि के पेड़ खूब लगे थे। कई जगह पेड़ सूख गए थे। शायद पानी का इंतज़ाम सही नहीं होगा। कुछ आगे जाते ही हमें हिरण और नीलगाय भी दिखीं, लेकिन बाघ महाशय के दर्शन अब तक नहीं हुए थे।

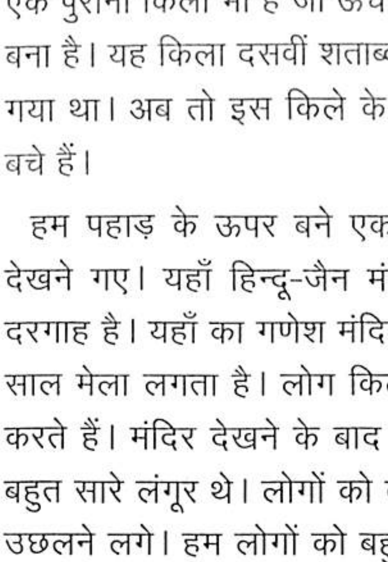

बाघ को हमने तब देखा, जब हम लौट रहे थे। बाघ एक हिरण का शिकार करने की कोशिश कर रहा था, मगर हिरण भाग गया और बाघ वहीं रास्ते में बैठ गया। हम वापस आश्रम आ गए। मुझे बुखार आ गया। मैं खाना खाकर सो गया। बाद में मुझे मालूम हुआ कि कुछ बच्चे रात को चोरी से फिल्म देखने चले गए थे।

दूसरे दिन ट्रैकिंग पर जाना था। मेरी तबीयत कुछ ठीक थी। इसलिए मैं भी साथ चल दिया। बच्चे पहाड़ पर चढ़ने की कोशिश कर रहे थे। कुछ तो पहाड़ के ऊपर तक पहुँच गये। हम उछलकूद करते हुए लौटे।

हमारे दो दिन यहाँ कैसे गुज़र गए, कुछ पता ही नहीं चला। हम फिर सवाई माधोपुर स्टेशन पहुँचे। ट्रेन से नई दिल्ली स्टेशन और फिर बस से अपने स्कूल। इस तरह स्कूल से शुरू हुआ सफर स्कूल पर आकर खत्म हो गया। ●

अमल, ग्यारहवीं, नोएडा

पहले मैंने इस लेख को शीर्षक दिया था "क्या डूबा...क्या तैरा?" फिर लगा "क्या" जानना तो आसान है। पानी भरी बाल्टी में एक-एक कर चीज़ें डालते जाओ - बटन, चाबी, कंचा, रेत, मोम...। पता चलता जाएगा क्या डूबता है, क्या तैरता है।

क्यों डूबा...क्यों तैरा?

असली गुत्थी तो "क्यों" में है। क्यों छोटी-सी पिन डूब गई और बड़ी-सी लकड़ी तैरती रही? क्यों लोहे की चाबी डूब जाती है और लोहे की बड़ी-सी नाव तैरती रहती है? क्यों अण्डा ताज़े पानी में डूब जाता है पर "नमक-पानी" में तैरने लगता है? "क्यों" वाले सवालों की कमी नहीं। पर "क्यों" की इस गुत्थी को सुलझाने का रास्ता "क्या" से होकर ही गुज़रता है। तो शुरुआत इसी से करते हैं।

क्या डूबा...क्या तैरा

चाबी, बटन, कंचा, रेत, मोम, माचिस की काड़ी और ऑलपिन जैसी चीज़ों को पानी में डालकर देखो। कुछ डूबेंगी, कुछ तैरेंगी। क्या तुम चीज़ों को देखकर पहले से अनुमान लगा सके थे कि कौन-सी चीज़ डूबेगी और कौन-सी तैरेगी?

यहाँ डूबने-तैरने का कारण वही है जो हमें बचपन से बताया जाता रहा है - भारी चीज़ें डूब जाती हैं और हल्की तैरती हैं।

पर यहाँ तुम सवाल कर सकते हो कि लकड़ी का लट्ठा तो छोटी-सी ऑलपिन से बहुत भारी होता है। फिर वह क्यों तैरता है जबकि ऑलपिन डूब जाती है। सवाल वाजिब है। इसके जवाब के लिए हमें "भारी" शब्द पर गौर करना होगा। यहाँ भारी की जगह घना शब्द का इस्तेमाल करना ठीक होगा। इसे समझने के लिए एक ही आकार की दो चीज़ें लो। जिस चीज़ का भार ज़्यादा होगा वह ज़्यादा घनी होगी। यानी अगर तुम एक ही आकार के दो गुटके लेते हो - एक लकड़ी का और एक लोहे का। तो चूँकि लोहे का गुटका ज़्यादा भारी है, इसलिए हम कहेंगे कि लोहा लकड़ी से ज़्यादा घना है। जो चीज़ पानी से ज़्यादा घनी है वह पानी में डूबेगी। कम घनी चीज़ तैरेगी।

तैरना-डूबना समझने के लिए ठोस वस्तु और तरल पदार्थों की तुलना करना ज़रूरी है। मान लो रेत और पानी की तुलना करनी है। तो एक आकार की दो बोतलें लो। एक में पानी और एक में रेत भर लो। दोनों में से जो भारी है वह ज़्यादा घना है। यानी दो बराबर मात्रा (आयतन) की वस्तुओं में से जो ज़्यादा भारी है, वह ज़्यादा घनी है। इसीलिए रेत पानी में डूबती है। पर ज़रूरी नहीं कि जो चीज़ एक द्रव में डूबती है वह सभी द्रवों में डूबेगी।

यह देखने के लिए इकट्ठा की गई सभी चीज़ों को मिट्टी के तेल, सरसों के तेल, नमक-पानी आदि में भी डाल कर देखो। हर बार कुछ डूबेंगी, कुछ तैरेंगी। तुम देखोगे कि सभी द्रवों में डूबने और तैरने वाली चीज़ों की सूची एक जैसी नहीं है। यानी डूबना-तैरना केवल उस वस्तु पर ही नहीं, द्रव पर भी निर्भर करता है। अगर ठोस वस्तु द्रव से ज़्यादा घनी है तो वह डूबेगी। नहीं तो वह तैरती रहेगी।

हीलियम भरे गुब्बारे का हवा में ऊपर की ओर जाने का वही कारण है जो माचिस की काड़ी का पानी में तैरने का है। हीलियम हवा से कम घनी है। गुब्बारे द्वारा हटाई गई हवा का वज़न हीलियम भरे गुब्बारे से ज़्यादा है।

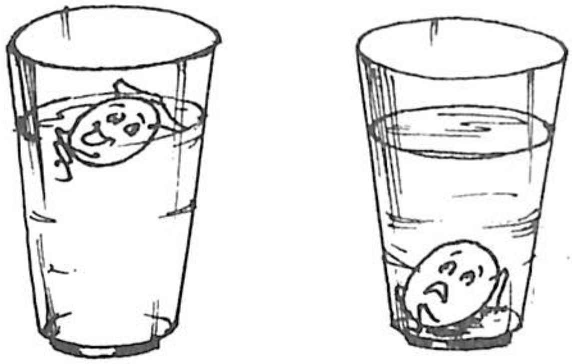

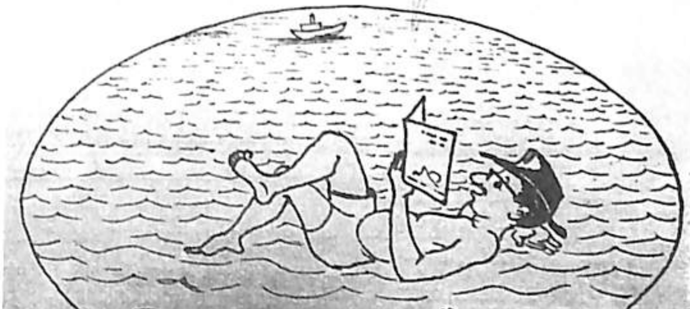

एक अण्डे को दो द्रवों में तैराकर देखते हैं। एक गिलास में सादा पानी है और एक में नमक घुला पानी। तुम देखोगे कि सादे पानी में डुबकियाँ लगाने वाला अण्डा नमक के पानी में मज़े से तैरने लगता है। यह जानने के लिए कि सादे पानी और नमक के पानी में से कौन ज़्यादा घना है दो एक जैसी बोतलों में सादा और नमकीन पानी लो। दोनों में से जो बोतल ज़्यादा भारी है उसका द्रव ज़्यादा घना है। खारा पानी सादे पानी से ज़्यादा घना होता है। यही वजह है कि नदी से समुद्र के खारे पानी में आते ही जहाज़ पानी में कुछ ऊपर उठ जाते हैं।

डूबने-तैरने की इतनी बातों के अलावा कुछ और भी बाकी है। जैसे क्यों सुई डूबी और जहाज़ तैरा! इस समस्या को सुलझाने से पहले एक कहानी सुनते हैं।

मृत सागर

इसके नाम से कुछ तो अन्दाज़ा लग ही गया होगा। यह संसार का सबसे नमकीन सागर है। किसी भी अन्य समुद्र से लगभग 6 गुना ज़्यादा नमकीन। सागर के अन्दर की तुलना में इसकी सतह कम नमकीन है। 40 मीटर की गहराई तक पहुँचते-पहुँचते प्रति किलो सागर जल में नमक की मात्रा 300 ग्राम तक हो जाती है।

इस लवणीयता के कारण न तो इस पानी में और न ही इसके आसपास कोई समुद्री वनस्पति उग सकती है न ही जलीय जीव इसमें ज़िन्दा रह पाते हैं। अत्यधिक लवणीयता के कारण मृत सागर का पानी इतना घना हो गया है कि इसमें इंसान वैसे ही तैरता है जैसे बोतल का कॉर्क पानी में तैरता है।

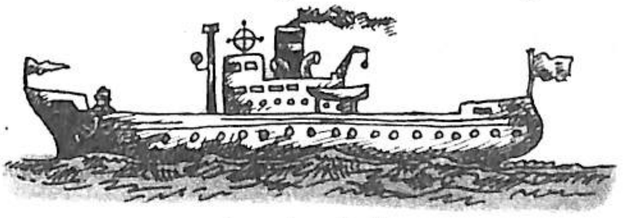

समुद्र के खारे पानी में जहाज़

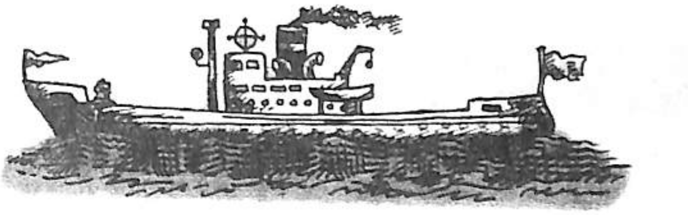

नदी के पानी में जहाज़

कहानी मुकुट की...

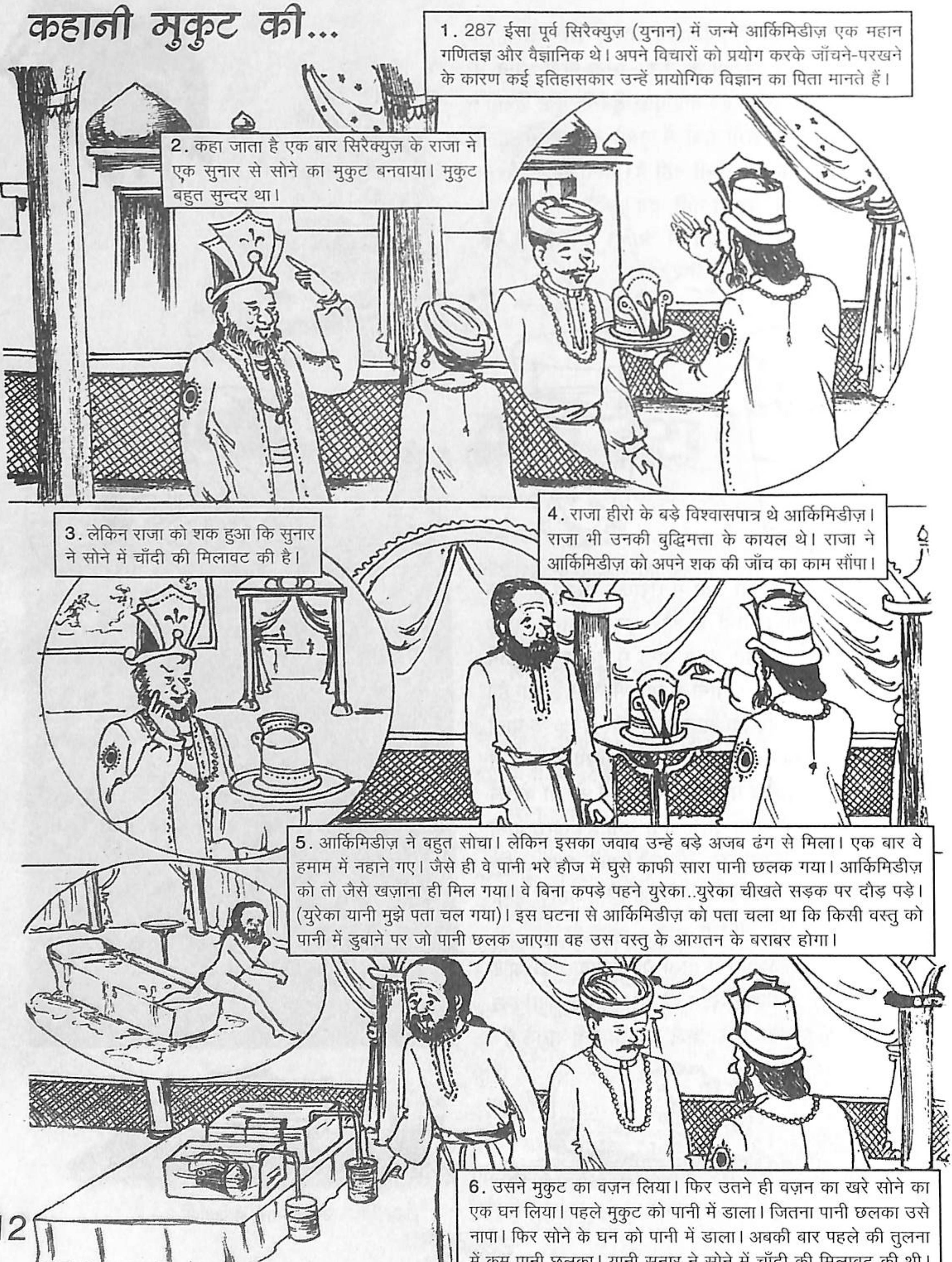

1. 287 ईसा पूर्व सिरैक्युज़ (युनान) में जन्मे आर्किमिडीज़ एक महान गणितज्ञ और वैज्ञानिक थे। अपने विचारों को प्रयोग करके जाँचने-परखने के कारण कई इतिहासकार उन्हें प्रायोगिक विज्ञान का पिता मानते हैं।
2. कहा जाता है एक बार सिरैक्युज़ के राजा ने एक सुनार से सोने का मुकुट बनवाया। मुकुट बहुत सुन्दर था।
3. लेकिन राजा को शक हुआ कि सुनार ने सोने में चाँदी की मिलावट की है।
4. राजा हीरो के बड़े विश्वासपात्र थे आर्किमिडीज़। राजा भी उनकी बुद्धिमत्ता के कायल थे। राजा ने आर्किमिडीज़ को अपने शक की जाँच का काम सौंपा।
5. आर्किमिडीज़ ने बहुत सोचा। लेकिन इसका जवाब उन्हें बड़े अजब ढंग से मिला। एक बार वे हमाम में नहाने गए। जैसे ही वे पानी भरे हौज में घुसे काफी सारा पानी छलक गया। आर्किमिडीज़ को तो जैसे खज़ाना ही मिल गया। वे बिना कपड़े पहने युरेका..युरेका चीखते सड़क पर दौड़ पड़े। (युरेका यानी मुझे पता चल गया)। इस घटना से आर्किमिडीज़ को पता चला था कि किसी वस्तु को पानी में डुबाने पर जो पानी छलक जाएगा वह उस वस्तु के आयतन के बराबर होगा।
6. उसने मुकुट का वज़न लिया। फिर उतने ही वज़न का खरे सोने का एक घन लिया। पहले मुकुट को पानी में डाला। जितना पानी छलका उसे नापा। फिर सोने के घन को पानी में डाला। अबकी बार पहले की तुलना में कम पानी छलका। यानी सुनार ने सोने में चाँदी की मिलावट की थी।

तो आर्किमिडीज़ साहब 3 शताब्दी ईसा पूर्व एक अहम बात बता गए थे। वस्तु द्वारा हटाए गए पानी का आयतन वस्तु के आयतन के बराबर होगा। आयतन यानी किसी वस्तु द्वारा घेरी जाने वाली जगह। मुकुट वाले किस्से में उनका कहना था कि चूँकि सोने का भार (घनत्व) चाँदी के भार (घनत्व) से ज़्यादा होता है इसलिए एक ग्राम सोने का आयतन एक ग्राम चाँदी के आयतन से कम होगा। इस आधार पर खरे सोने से बने मुकुट का आयतन इतने ही वज़न के मिलावटी मुकुट से कम होगा।

आर्किमिडीज़ का नियम यह कहता है कि किसी चीज़ को किसी द्रव में डुबाने पर उस चीज़ पर नीचे से एक बल लगेगा। मान लो कि तुम एक सेब को पानी में डालते हो। पानी में सेब के लिए जगह तभी बनेगी जब वहाँ का पानी अपनी जगह से खिसकेगा।

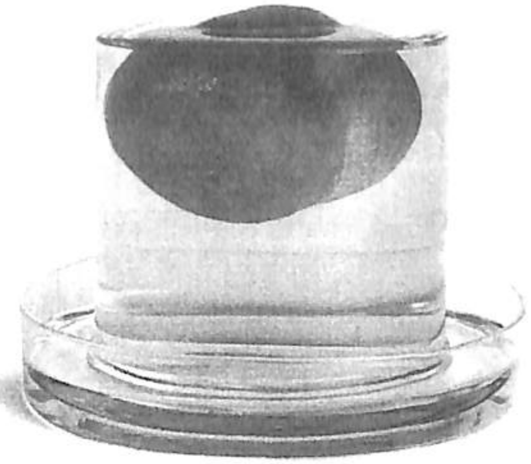

पानी में तैरता सेब - पानी जो बल सेब पर लगा रहा है वह सेब के भार के बराबर है। (भार भी एक बल है जो नीचे की ओर लगता है।)

आर्किमिडीज़ के नियम के मुताबिक अपनी जगह से खिसके इस पानी का भार अगर वस्तु के भार के बराबर होगा तो वस्तु तैरेगी अन्यथा डूब जाएगी।

अब हम कील के डूबने और जहाज़ के तैरने वाले सवाल पर आते हैं। कील के डूबने का कारण यह है कि कील द्वारा हटाए गए पानी का आयतन कील के भार से कम होता है। लेकिन अगर कील को चपटाकर कटोरी का आकार दे दिया जाए तो कटोरी ज़्यादा पानी को अपनी जगह से हटाएगी। हटाए गए पानी का वज़न कटोरी के वज़न से बराबर होने के कारण वह तैरती रहेगी।

अन्त में एक सवाल

एक तराजू है। उसके दोनों पलड़ों पर एक जैसे दो डिब्बे रखे हैं। एक डिब्बा पानी से लबालब भरा है। दूसरे में भी लबालब पानी भरा है लेकिन उसमें लकड़ी का एक टुकड़ा तैर रहा है। कौन-सा डिब्बा भारी होगा? कइयों से पूछने पर इसके कई अलग-अलग जवाब पाए।

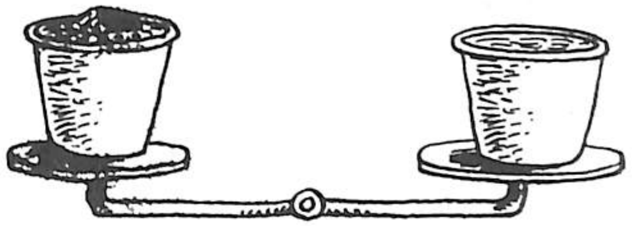

कुछ ने कहा कि लकड़ी वाला डिब्बा भारी होगा क्योंकि इस डिब्बे में पानी भी है और लकड़ी भी।

कुछ ने कहा पानी वाला डिब्बा भारी होगा क्योंकि पानी लकड़ी से ज़्यादा भारी है।

करके देखो! दोनों डिब्बों का वज़न बराबर होगा। यह सही है कि दूसरे डिब्बे में लकड़ी के टुकड़े के होने की वजह से पहले डिब्बे की तुलना में कम पानी होगा। लेकिन लकड़ी का टुकड़ा पानी में तैर रहा है इससे साफ है कि वहाँ से कुछ पानी छलक गया है। इस छलके पानी का वज़न पानी में डूबे लकड़ी के टुकड़े के वज़न के एकदम बराबर होगा।

सिर खुजलाने के लिए कुछ - क्यों तेल में डालने पर पूड़ी डूब जाती है, लेकिन फूलते ही ऊपर तैरने लगती है?

● शशि सबलोक

कहानी

नटखट बछड़ा

राधा एच.एस.

नटखट बछड़ा अपनी माँ का लाड़ला था और बेहद शरारती था। माँ हमेशा कहती थी शरारत करना छोड़ दे, वरना किसी दिन बुरी तरह फँस जाएगा। लेकिन नटखट ने माँ की बात कभी नहीं सुनी।

एक दिन सभी पशुओं के छौने छुपम छुपाई खेल रहे थे। बछड़े बखरी में जाकर छुप गये थे। नटखट बछड़े को एक कोने में मटकी पड़ी दिखाई दी। उसने उत्सुकतावश मटकी में अपना सिर डाल दिया। मटकी में कुछ नहीं था। नटखट ने सिर मटकी से बाहर निकालने की कोशिश की, लेकिन सफल नहीं हुआ। उसने सिर को ज़ोर-ज़ोर से इधर-उधर झटका, पैर से मटकी को दूर छिटकने की कोशिश की, लेकिन सिर मटकी से नहीं निकला तो नहीं निकला।

इस बीच खेल खत्म हो गया और सभी बछड़े अपनी-अपनी माँ के पास चले गये। लेकिन नटखट बछड़ा इस हालत में कहाँ जाये? और जाये भी तो कैसे जाये? मटकी में उसका सारा मुँह ही नहीं, कान तक घुस गये थे।

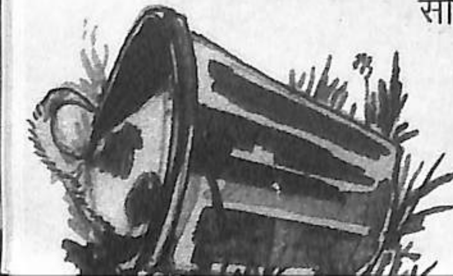

अब चारों तरफ भयानक अँधेरा था और घुटन थी। नटखट ने माँ को पुकारा- "माँ ऽ ऽ आँ ऽ ऽ...माँ ऽ ऽ...!" लेकिन उसकी आवाज़ मटकी के भीतर बड़ी ज़ोर से गूँजी - भाँ ऽ ऽ भाँ ऽ ऽ भाँ ऽ ऽ!! - खुद अपनी आवाज़ सुनकर नटखट डर गया। वह डरकर ज़ोर से चीखा- "माँ ऽ ऽ...!" फिर वैसी ही आवाज़ आयी - भाँ ऽ ऽ...!!

डर के मारे नटखट बछड़े के रोंगटे खड़े हो गये।

जब सबके बछड़े अपनी-अपनी माँ के पास पहुँच गये और नटखट नहीं पहुँचा तो नटखट की माँ को चिन्ता हुई। कहाँ रह गया? कहीं रस्ता तो नहीं भटक गया? किसी शेर ने तो नहीं दबोच लिया? साँप ने तो नहीं काट लिया? गड्ढ़े में तो नहीं गिर गया? हे भगवान!

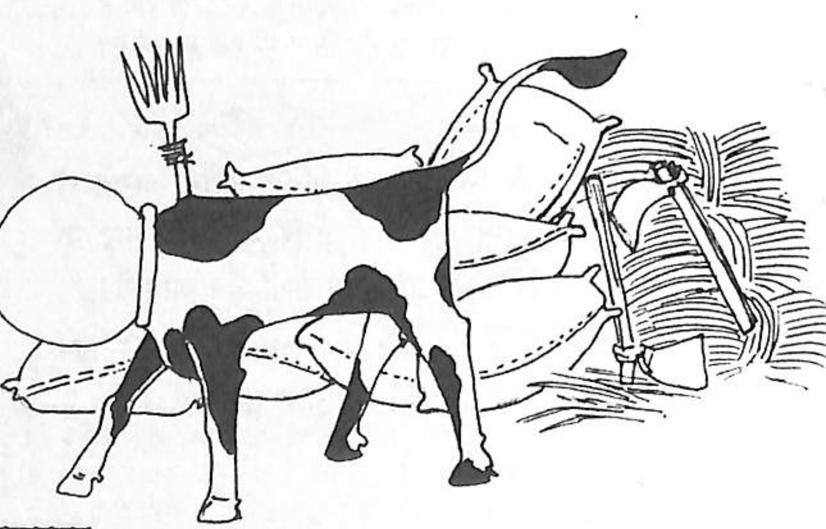

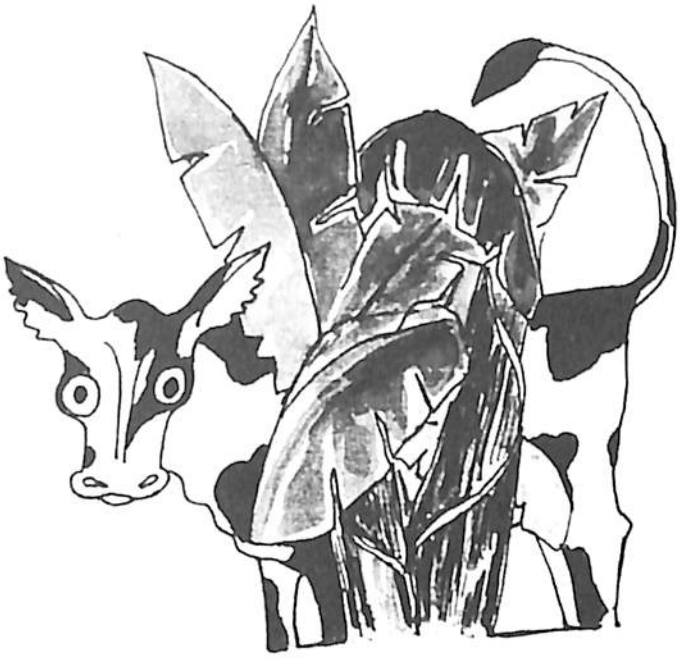

उसने एक बछड़े से पूछा- "तुमने नटखट को देखा क्या? क्या वह तुम्हारे साथ नहीं खेल रहा था?"

बछड़े ने जवाब दिया- "था तो हमारे ही साथ, लेकिन फिर पता नहीं कहाँ चला गया।"

"कहाँ थे तुम लोग?"

"बखरी में। फिर वहाँ कुछ अजीब-अजीब आवाज़ें आने लगीं, इसलिए हम सब डर के मारे भाग आये।"

नटखट की माँ ने बखरी की तरफ सिर उठाकर कान खड़े करके ध्यान से सुना। कुछ विचित्र-सी आवाज़ थोड़ी-थोड़ी देर में अब भी आ रही थी।

उसने तेज़ी से बखरी की दिशा में दौड़ लगायी।

जब नटखट की माँ बखरी में पहुँची तो उसने देखा कि नटखट मटकी में मुँह फँसाये पैर उछाल रहा है और गोल-गोल घूम रहा है। उसकी पूँछ तनी हुई है और मुँह से अजीब-अजीब आवाज़ें निकल रही हैं।

नटखट की माँ रंभाई- "बाँ ऽ ऽ बाँ ऽ ऽ!"

माँ की आवाज़ अपने पास सुनकर नटखट की घबराहट कुछ कम हुई। वह थोड़ा शान्त हुआ।

नटखट की माँ ने अपना शरीर नटखट के शरीर के साथ सटाया और उसकी गरदन को चाटा।

अब नटखट एकदम शान्त खड़ा था। उसे विश्वास था माँ ज़रूर उसे इस मुसीबत से छुटकारा दिला देगी।

फिर नटखट की माँ ने अपने सींग से मटकी पर दो-तीन बार ज़ोर से मारा। मटकी टूट गयी और नटखट का सिर बाहर आ गया। नटखट ने अपनी गरदन माँ की गरदन के नीचे छिपा ली। माँ ने उसे लाड़ भी किया लेकिन एक-दो बार अपना गुस्सा प्रकट करने के लिए उसे सींग मारकर दूर भी धकेला।

फिर लगातार दो दिन नटखट पूरे समय अपनी माँ के साथ रहा।

लेकिन इसके बाद उसकी शरारतें फिर शुरू हो गयीं......।

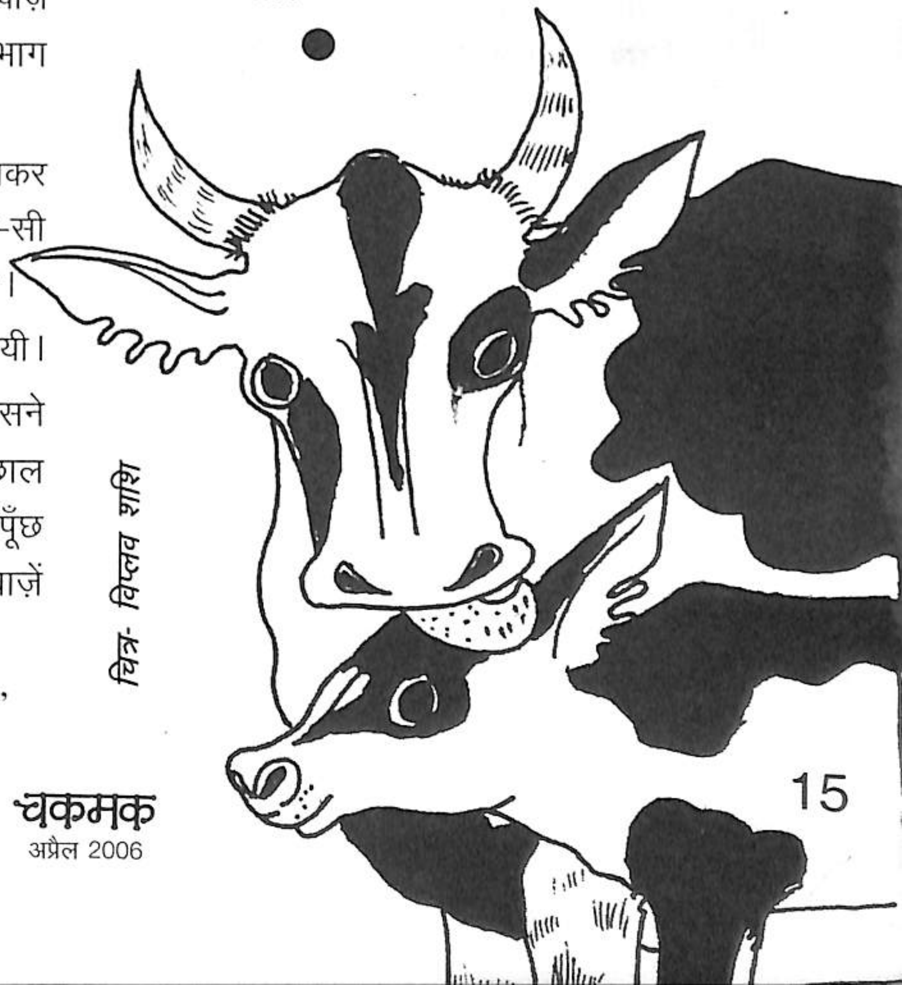

चित्र- विप्लव शशि

प्रयोगशाला

हो सकता है कि यहाँ दिए कई प्रयोग तुमने पहले भी किए हों। पर चूँकि बात चीज़ों के डूबने तैरने की हो रही थी। इसलिए हमने सोचा इससे जुड़े प्रयोग एक-साथ दिए जाएँ।

आर्किमीडीज़ के सिद्धांत के मुताबिक किसी भी चीज़ को किसी तरल में डुबाने पर उस पर एक बल लगेगा। सबसे पहले इसी को देखते हैं...

किसने दिया सहारा........................

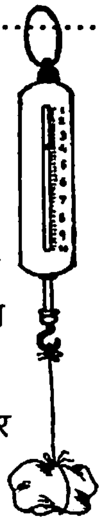

एक स्प्रिंग बैलेंस का इंतज़ाम करो। धागे को हुक में बाँधो। धागे के दूसरे सिरे पर चित्र में दिखाए तरीके से एक पत्थर बाँध दो। पत्थर का हवा में वज़न नोट कर लो।

अब इस पत्थर को पूरी तरह पानी भरे बर्तन में पूरा डुबा दो। पत्थर का वज़न लो। कितना वज़न निकला?

पत्थर के कुछ हिस्से को ही पानी में डुबाकर देखो। पत्थर की जगह लकड़ी, कील आदि का वज़न भी लेकर देखो। हर बार वज़न लिखना न भूलना।

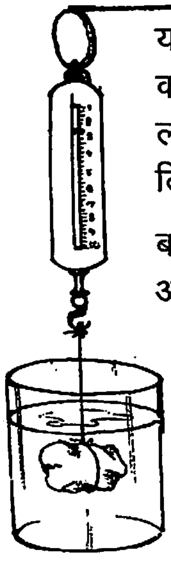

यानी यह पानी का कमाल था। पर द्रव तो कई तरह के होते हैं। क्या सभी बराबर बल लगाते हैं? हाथ कंगन को आरसी क्या, पढ़े लिखे को फारसी क्या! करके देखते हैं।

बारी-बारी से तुला में लटके इस पत्थर को अलग-अलग द्रवों में डुबाकर देखो - मिट्टी का तेल, खाने का मीठा तेल, मूँगफली का तेल, दूध, नमक का घोल और जो भी तुम्हारी पहुँच में हो।

द्रवों के बदलने का पत्थर के वज़न पर क्या असर पड़ा?

अब चलते हैं दूसरे पड़ाव पर।

आर्किमिडीज़ यह भी बता गए हैं कि द्रव में किसी वस्तु को डुबाने पर उसपर द्रव कितना बल लगाएगा। यह बल होगा वस्तु द्वारा हटाए गए द्रव की मात्रा के वज़न के बराबर। इसे ज़रा विस्तार से बताते हैं। तुम यह तो जानते ही हो कि पानी में कोई चीज़ डाली जाए तो वह जगह घेरेगी। तभी तो लबालब भरे पानी में बर्फ डालने पर पानी छलक जाता है। बर्फ क्या लकड़ी का टुकड़ा, ताला या चाबी कुछ भी डालो हाल यही होगा।

अब बारी है करके देखने की

सबसे पहले छलक गए पानी को इकट्‌ठा करने का इंतज़ाम करना होगा। इसके लिए टीन के डिब्बे में चित्र में दिखाए अनुसार एक खाँचा बना लो। टोंटी से गिरने वाले पानी को इकट्‌ठा करने के लिए उसके नीचे एक छोटा डिब्बा रख लो।

डूबने वाली चीज़ों पर लगने वाला बल

अब खाँचेदार डिब्बे में पानी भर लो। खाँचे से पानी छलकने लगे तो पानी डालना बन्द कर दो। इसके

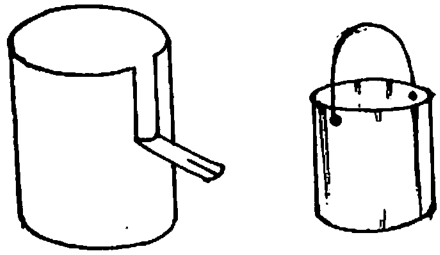

बाद स्प्रिंग में लटके पत्थर को पानी में डुबो दो। इकट्‌ठा किए गए पानी के वज़न को नाप लो। (पानी इकट्‌ठा करने के बाद छोटे डिब्बे का वज़न कर लो। फिर इस वज़न से खाली डिब्बे का वज़न घटा दो।)

इस पानी के वज़न और पत्थर को पानी में डालने के बाद घटे वज़न की तुलना करो।

पानी में डूबने वाली अन्य वस्तुओं के साथ भी ऐसा करके देखो।

तैरने वाली चीज़ों पर लगने वाला बल

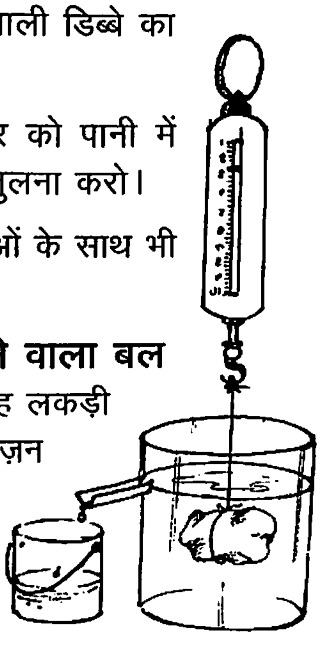

स्प्रिंग बैलेंस पर पत्थर की जगह लकड़ी का टुकड़ा बाँधो। हवा में इसका वज़न लो।

अब स्प्रिंग बैलेंस में बँधे इस टुकड़े को पानी में डुबाओ।

यह तो तुम्हें मालूम है कि लकड़ी पूरी तरह से नहीं डूबेगी। जितनी भी डूबे, उसके कारण छलक आए पानी को इकट्ठा करो और उसका वज़न लो। क्या नापे गए वज़नों में कोई संबंध दिखा?

कौन...कहाँ...

काँच की एक लम्बी-सी बोतल या काँच का गिलास ले लो। इसमें अलग-अलग तरल पदार्थ डालो। जैसे पानी, मिट्टी का तेल, नमक का पानी, सरसों का तेल, पेट्रोल आदि। अब इसी बोतल में कुछ ठोस चीजें डालो। जैसे लकड़ी का गुटका, कॉर्क, पिन, पँखुड़ियाँ, प्लास्टिक की क्लिप, पत्थर, कील, मोम का टुकड़ा आदि। अब देखो कौन कहाँ तैरा...कहाँ डूबा...?

हमने एक गिलास में शहद, पानी और मूँगफली का तेल डाला। इसमें प्लास्टिक का खिलौना, कार्क और एक अंगूर डाला। चित्र में क्या तुम बता सकते हो कौन कहाँ है? यह बताने के लिए तुम्हें खुद करके देखना होगा।

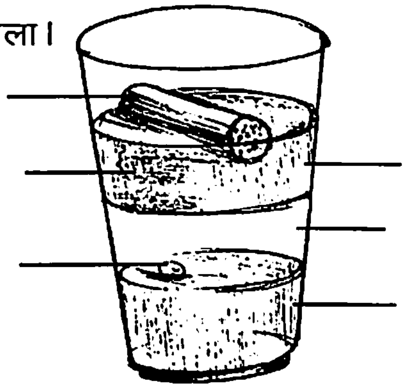

पनडुब्बी का पानी में उतरना-तैरना

स्टील की बनी पनडुब्बी पानी में डूबना तैरना दोनों करती है। इसमें इसके अन्दर बनी बड़ी-बड़ी टँकियाँ बड़ी मदद करती हैं। जब इनमें हवा भरी होती है तो पनडुब्बी तैरती है। जब पानी भरता है तो डूबती है।

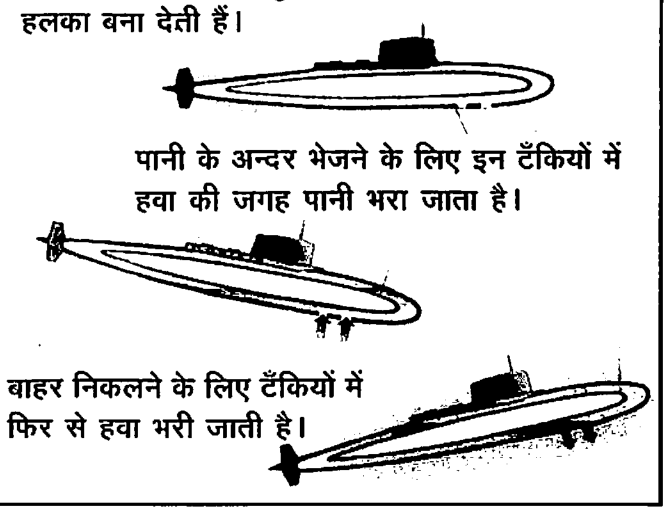

तुम चाहो तो अपनी भी एक पनडुब्बी बना सकते हो।

इसके लिए एक चौड़े मुँह वाली बोतल लो। इसमें लोहे या पत्थर के टुकड़े डाल दो। ये टुकड़े बोतल के तले से चिपके रहें इसलिए इसमें थोड़ी सी पिघली मोम डाल दो। पत्थर इतने हों कि यह बोतल पानी में खड़ी अवस्था में तैरती रहे। इस बोतल में दो छेद वाला स्टॉपर लगा दो। एक छेद में U आकार की काँच की नली घुसा दो। (या खाली रिफिल) इस तरह कि उसका एक सिरा बोतल के तले के पास रहे और दूसरा बाहर रहे। दूसरे छेद में काँच की एक छोटी नली (या खाली रिफिल) हो। इसमें रबर की नली या वॉल्व ट्यूब घुसा दो। इसके बाद इस बोतल को पानी भरे एक बरतन में रख दो।

अब रबर की पाइप में मुँह लगाकर कुछ हवा खींच लो। बोतल की हवा के बाहर निकलने के कारण बरतन का कुछ पानी काँच की नली से होता हुआ बोतल में आ जाएगा। हवा तब तक खींचते रहो जब तक बोतल पानी में डूब न जाए।

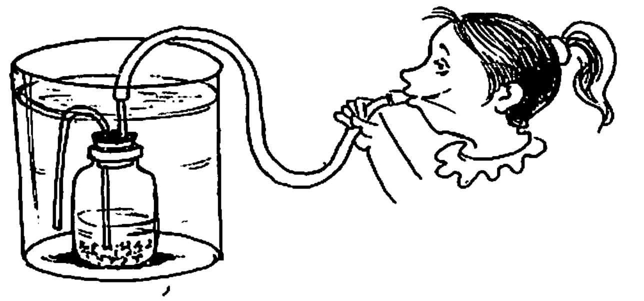

अब बोतल को ऊपर उठाना हो तो रबर की पाइप में हवा फूँको। बोतल का पानी बाहर निकलेगा और बोतल ऊपर उठ आएगी।

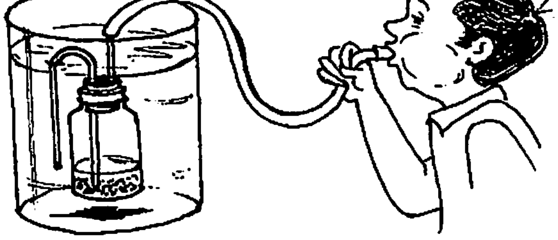

गप्प सुनो भई गप्प

रमेश उपाध्याय

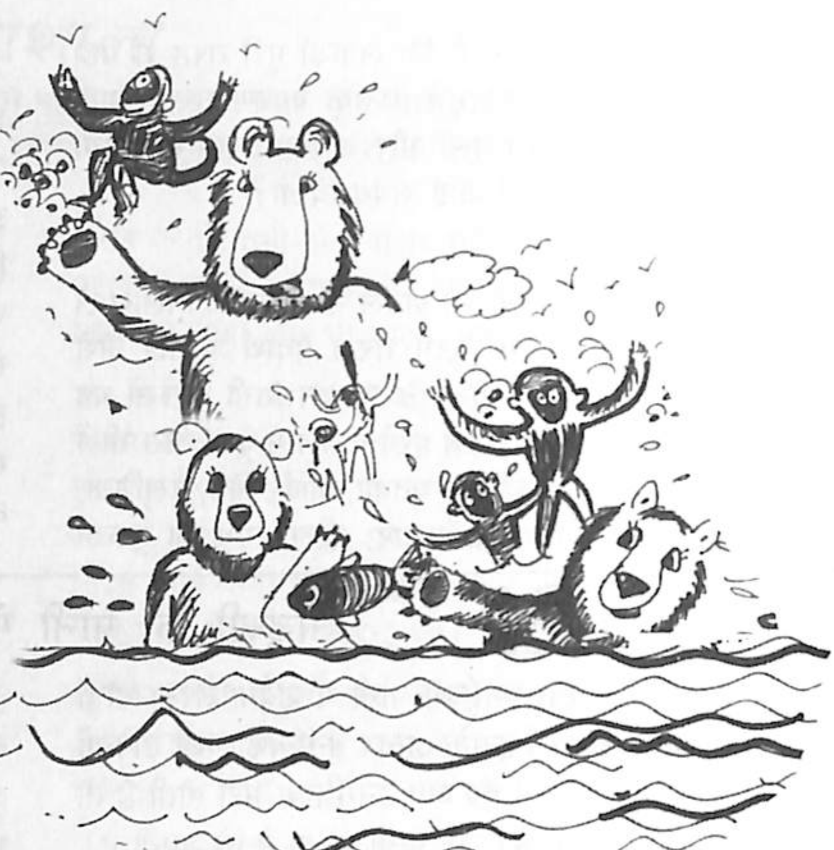

गप्प सुनो भई गप्प सुनो
गप्प सुनो भई गप्प!
देखा आसमान के अंदर
भरा हुआ है एक समंदर
उसमें ढेरों भालू-बंदर
उछल-कूदकर नहा रहे हैं
छपाछप्प भई छपाछप्प भई छपाछप्प!

गप्प सुनो भई गप्प सुनो
गप्प सुनो भई गप्प!
देखा इक जंगल के बाहर
बाबा एक बबूल उगाकर
उसके काँटे दूर भगाकर
आम सभी को लुटा रहे हैं।
टपाटप्प भई टपाटप्प भई टपाटप्प!

गप्प सुनो भई गप्प सुनो भई गप्प सुनो भई गप्प!
देखा एक नदी के ऊपर
बना हुआ है परबत का घर
उसमें चाँद-सितारे मिलकर
हलवा-पूड़ी उड़ा रहे हैं।
गपागप्प भई गपागप्प भई गपागप्प!

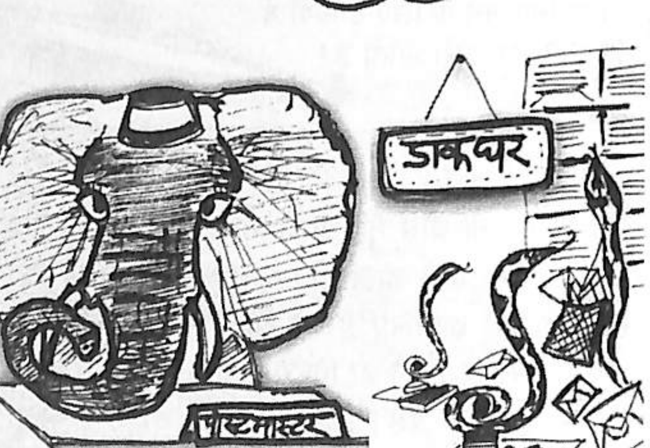

गप्प सुनो भई गप्प सुनो भई गप्प सुनो भई गप्प!
देखा एक अजीब डाकघर
हाथी जिसका पोस्टमास्टर
करें चाकरी जिसमें अजगर
मुहर डाक पर लगा रहे हैं
ठपाठप्प भई ठपाठप्प भई ठपाठप्प!
गप्प सुनो भई गप्प सुनो भई गप्प सुनो भई गप्प!

चित्र- नूपुर तिवारी

अनोखी अल्पना

कृष्ण कुमार

क्रिसमस की सुबह थी। पांडिचेरी की हर सड़क सजी हुई नज़र आती थी। कहीं रंगीन कागज़ के सितारे चमक रहे थे, तो कहीं पेड़ों में लटके काँच के चमकदार गोले। हवा में ताज़गी थी और सूरज अभी नहीं निकला था।

बिस्तर से उठकर लता सीधे बाहर वाले दरवाज़े की तरफ गई। छोटा भाई और मम्मी-पापा अभी सो रहे थे। कल दोपहर लता ने घर के सामने एक सुन्दर अल्पना बनाई थी।

इन दिनों सारे शहर की सड़कों पर घरों के सामने रंगोली बनी रहती थी। मोटर-गाड़ियों की संख्या बढ़ जाने से रंगोली के मिट जाने का डर बना रहता था। लता को रात भर यही चिंता रही कि उसकी अल्पना किसी गाड़ी ने खराब न कर दी हो।

सड़क वाले दरवाज़े तक पहुँचने के लिए मम्मी-पापा का कमरा पार करना ज़रूरी था। लता चप्पलों के बिना, दबे पाँव उस कमरे से निकली। दरवाज़े की चटकनी खोलने में भी आवाज़ का डर था, इसलिए लता ने दरवाज़े को एक हाथ से कसकर दबाया और पंजों के बल खड़े होकर दूसरे हाथ से चटकनी धीरे-से खोली। दरवाज़ा खुला, ताज़ी हवा का हल्का-सा झोंका अंदर आया और लता बाहर गई। उसकी पहली नज़र रंगोली पर पड़ी।

रंगोली एकदम सुरक्षित थी। मेहनत से बनाये गये लाल रंग के बड़े-बड़े फूलों की पंखुड़ियाँ हरे पत्तों की किनार के बीच चमक रही थीं। फूलों के घेरे के भीतर की जगह में पाँच रंगों से बना सितारा था।

लता अपनी अल्पना देखकर खुश हो रही थी कि तभी उसे सड़क के कोने से एक ट्रक की घरघराहट सुनाई दी। बोतलों से भरा ट्रक मुड़कर लता की तरफ आ रहा था। पांडिचेरी में सड़कें और गलियाँ एकदम सीधी हैं, इस कारण चौराहों के मोड़ तीखे हैं। ट्रक लम्बा था, इसलिए पूरी तरह मुड़ते-मुड़ते वह लता के दरवाज़े के बिल्कुल करीब आ पहुँचा। ट्रक में लदी बोतलें हिल रही थीं। देखते

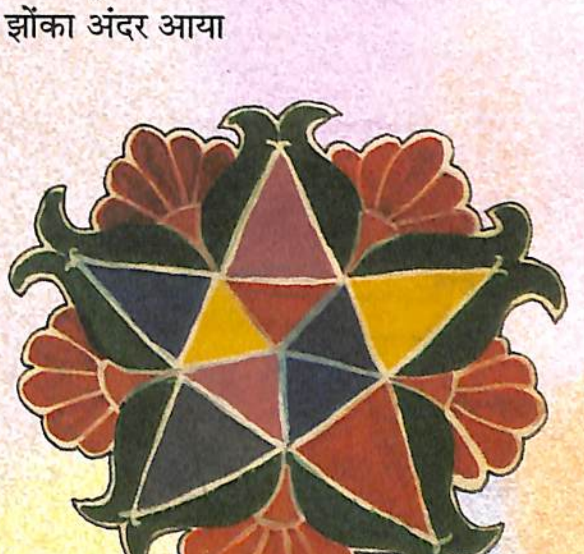

चित्र- विप्लव शशि

ही देखते ट्रक लता की रंगोली को कुचलता हुआ निकल गया। रंगोली के रंग ट्रक के पहियों से चिपककर दूर तक फैल गये।

ट्रक की आवाज़ लता के कानों में गूँजती रही। उसकी अल्पना लगभग बर्बाद हो गई थी। कल की पूरी दोपहर लता ने इस अल्पना को बनाने में लगा दी थी। स्कूल का काम वह इसीलिए पूरा नहीं कर पाई थी। इतनी मेहनत से बनाई गई अल्पना को एक पल में नष्ट होते देखकर लता का मन रो उठा। पर वह रोई नहीं। एक अजीब-सी बेचैनी से भरी वह घर के अन्दर गई और रसोई के दरवाज़े के पीछे रखा झाड़ू उठाकर लाई। फूलों और पत्तियों के रंग एक-दूसरे में बुरी तरह मिल गये थे। लता ने जल्दी-जल्दी झाड़ू चलाकर सारी रंगोली साफ की।

फुर्ती से उठकर लता वापस घर के अन्दर गई और गुसलखाने से बाल्टी भर पानी लाई। रंगोली के अवशेष अभी पूरी तरह मिटे नहीं थे, लेकिन जब लता ने सारी बाल्टी एक साथ उड़ेली तो बचे-खुचे रंग भी घुल गये। खाली बाल्टी लटकाये लता वापस गुसलखाने की तरफ जा रही थी, तभी मम्मी की आँख खुल गई। लता के हाथ में बाल्टी देखकर मम्मी चौंकी। उन्होंने पूछा- लता, पानी कहाँ ले गई थी?

लता अपनी अल्पना के कुचले जाने से अभी तक दुखी और नाराज़ थी। उसे लगा कि यदि वह मम्मी को ट्रक वाली बात बतायेगी तो रो पड़ेगी। इसलिए कहा- कुछ नहीं, मम्मी... रंगोली दोबारा बना रही हूँ।

लता का जवाब सुनकर मम्मी को हैरानी नहीं हुई। उन्हें मालूम था कि लता अपनी बनाई किसी चीज़ से जब तक पूरी तरह संतुष्ट नहीं हो जाती, तब तक उसे सुधारती रहती है। नवम्बर में स्कूल के विज्ञान-मेले के लिए उसने बहुरुपदर्शी बनाया था, लेकिन जमा करने दो ही दिन बाद वापस ले लिया था। उसे लगा था कि चूड़ियों के टुकड़े कुछ बड़े रह गये थे, इसलिए बार-बार अटकते थे।

बाल्टी गुसलखाने में रखकर लता ने अपनी मेज़ के पीछे वाली खिड़की से रंगों की थाली उठाई और सड़क

पर आ गई। पुरानी रंगोली एकदम साफ हो चुकी थी। थाली में बचे रंगों में से एक-दो लता को कुछ कम लगे, पर नई रंगोली की शुरूआत करने के लिए काफी थे।

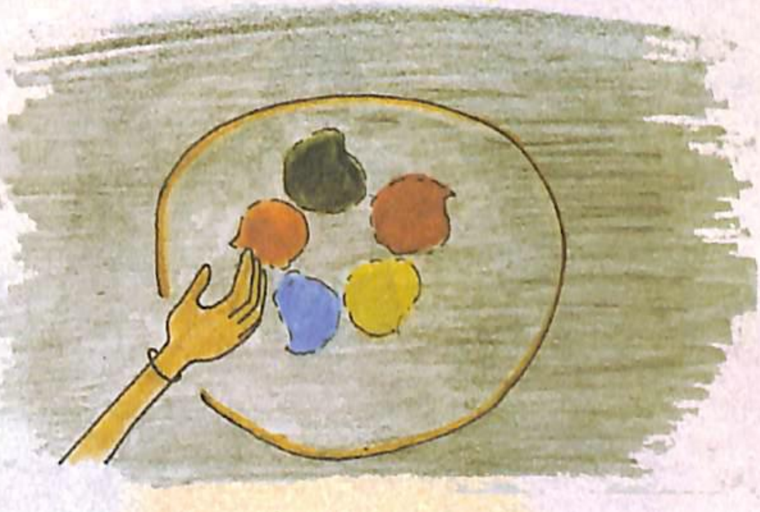

लेकिन नई रंगोली में बनाया क्या जाये? लता की नज़र आसपास के घरों के सामने बनी अल्पनाओं पर गई। सभी में फूल-पत्ती का डिज़ाइन बना था। किसी-किसी में पत्तियों के बीच मोर या हंस बना था। लता के पास अल्पना के डिज़ाइनों की किताब थी और उसमें भी ऐसी ही आकृतियाँ बनी थीं। लता सबसे अलग, एक निराली अल्पना बनाना चाहती थी। पर उसमें दिखाया क्या जाये?

लता सड़क पर बैठ गई। ज़्यादा कुछ सोचे बगैर उसने एक सफेद घेरा बनाया और उसके एक हिस्से पर नारंगी रंग का टुकड़ा बनाने लगी। टुकड़ा आम जैसा दिखने लगा तो लता ने उसका बीच वाला भाग कुछ और फैला दिया और दोनो सिरों को नुकीला बना दिया। वह किसी भी हालत में फल, फूल या पत्ती नहीं बनाना चाहती थी।

नारंगी टुकड़े को गौर से देखते हुए लता उसके बगल में नीले रंग की वैसी ही आकृति बनाने लगी। नीला बुरादा फैलाते हुए उसका हाथ अपने आप एक नन्हे घेरे की कल्पना में घूम गया। लता की आँखों में हल्की-सी चमक उभर आई। वह नीले के पास पीला, फिर पीले के बाद केसरी और उसके बाद हरा टुक्ड़ा बनाती चली गई। सारे टुकड़े एक छोटे-से घेरे में थे, पर घेरे का ऊपरी हिस्सा अभी खुला था। घेरे में पाँच रंगों की चुन्नट उभर आई थी जो एक रंग-बिरंगी स्कर्ट जैसी दिखती थी।

लता इस स्कर्ट के नीचे दो नन्हीं टाँगें और उनके नीचे जूतों की कल्पना करने लगी। ऊपर होगा ब्लाउज़ और चेहरा। लता ने सोचा कि यदि बड़े सफेद घेरे में ऐसी पाँच लड़कियाँ हों तो वह उनकी चोटियाँ आपस में जोड़ देगी। घेरे के बीच की जगह में चमकता हुआ सूरज होगा। पूरी रंगोली की कल्पना करते-करते लता का सिर घूमने लगा, हाथों में बिजली दौड़ गई। पैर उतावले हो गये। उसे लगा कि यदि उसने तुरन्त इस नये डिज़ाइन को अपनी कॉपी पर नहीं उतारा तो सड़क पर उभरती लड़की गायब हो जायेगी।

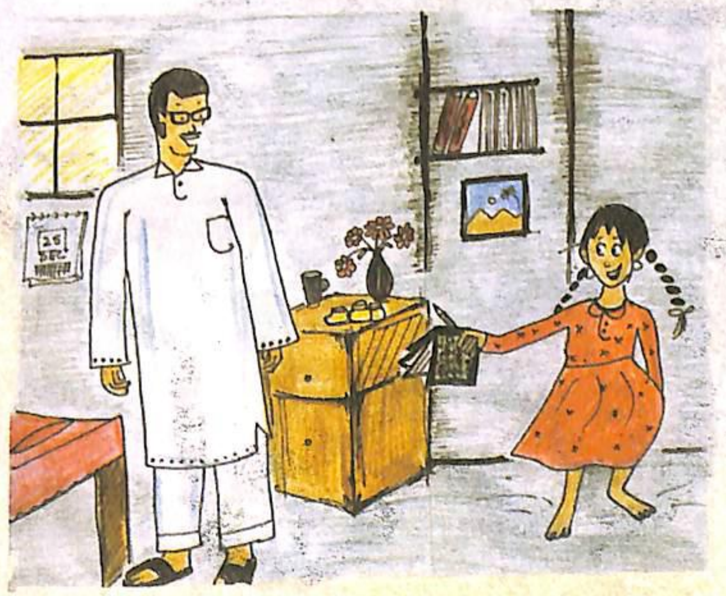

वह झटके से उठी और कूदकर घर में दाखिल हुई। पापा बिस्तर से निकल रहे थे। उन्होंने लता को भागते देखा तो सोचा कि ज़रूर उसे कोई चोट लग गई है।

"क्या बात है, लता?" पापा ने पूछा।

"कुछ नहीं पापा" - लता ने मुड़कर देखते हुए जवाब दिया। वह अपनी मेज़ तक पहुँच चुकी थी।

"क्या तुम्हें चोट लग गई है? तुम सुबह-सुबह दौड़ क्यों रही हो? आज तो क्रिसमस की छुट्टी है।"

पापा बिस्तर के नीचे रखी अपनी चप्पलें टटोलते हुए बोलते गये।

लता को पापा की यह सलाह हमेशा याद रहती थी कि चोट लगने पर उसे साफ पानी और साबुन से धोना चाहिए। अपनी मेज़ से कॉपी और पेन्सिल उठाकर वापस बाहर के दरवाज़े की तरफ भागते हुए लता बोली– "पापा, आप कोई सपना देख रहे थे क्या? मुझे कोई चोट नहीं लगी है।"

दरवाज़े और सड़क के बीच की तीन सीढ़ियाँ लता ने एक छलाँग में पार कीं। सड़क पर बैठकर वह उस डिज़ाइन को कॉपी पर बनाने लगी जिसका आविष्कार उसने कुछ देर पहले किया था। पाँच रंगों वाली स्कर्ट जिस तरह सड़क पर बनी थी, ठीक उसी तरह लता ने कॉपी पर बनाई।

पेन्सिल से तस्वीर बनाना लता को बहुत आसान लगता था और पसन्द भी था। किसी चीज़ को देखकर उसकी आकृति हूबहू कागज़ पर बनाने का अभ्यास वह जब चाहे करती रहती थी। क्लास में बैठे-बैठे बोरियत महसूस होने पर वह खिड़की के बाहर लगे गुलमोहर के फूल या फिर सामने बैठी लड़की के सिर की तस्वीर बनाने लगती थी।

थोड़ी देर में कॉपी पर बनी गोलाकर रंगोली में पाँच लड़कियाँ साफ-साफ दिखने लगीं। उनके सटे हुए चेहरों में लता ने आँख, नाक, कान और मुँह तरह जोड़ दीं जैसे पाँचों लड़कियाँ साथ-साथ उछली हों। चित्र पूरा होते-होते लता को साफ दिखने लगा कि उसकी यह अल्पना पूरे मोहल्ले में ही नहीं, पूरे शहर में अनोखी होगी और लोग उसे देखने दूर-दूर से आयेंगे।

सड़क पर झुककर लता अपनी रंगोली बनाने में जुट गई।

★

सभी चित्र- नुपूर तिवारी

डॉ. बी. आर. अम्बेडकर

14 अप्रैल को डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म दिवस है। दलितों के मसीहा माने जाने वाले डॉ. अम्बेडकर की जयंती लाखों दलित मनाते हैं।

भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को महू में रामजी और भीमाबाई अम्बेडकर के यहाँ हुआ था। वे महार जाति के थे जिन्हें अन्य जाति के लोग अछूत मानते थे। अछूत होने का अहसास डॉ. अम्बेडकर को बचपन से ही हो गया था। स्कूल में भीम को पानी के मटके को छूने की मनाही थी। प्यास लगती तो वे दोनों हथेलियों को कटोरानुमा बनाते और सवर्ण समझी जाने वाली जाति का कोई बच्चा आकर ऊपर से पानी उड़ेल देता।

डॉ. अम्बेडकर ने जीवन भर अस्पृश्यता (अछूतपन) के विरुद्ध लड़ाई लड़ी। वे दलितों के प्रिय नेता बने और बाबासाहेब के नाम से जाने जाने लगे।

वे भारतीय संविधान सभा के अध्यक्ष रहे - इसलिए उन्हें 'भारतीय संविधान का पितामह' भी कहा जाता है।

यहाँ हम नेशनल बुक ट्रस्ट द्वारा छापी गई वसंत मून द्वारा लिखी उनकी जीवनी 'समता के समर्थक अंबेडकर' के कुछ अंश दे रहे हैं। साथ ही एक दलित महिला 'भामा' की जीवनी के अंश भी दे रहे हैं।

"मुंबई असेंबली में अगस्त, 1923 में एक महत्वपूर्ण प्रस्ताव आया था। इस प्रस्ताव के अनुसार सार्वजनिक पनघट, पाठशाला, अस्पताल, अदालत आदि स्थलों पर अछूतों पर कोई रोक नहीं लगानी थी। प्रस्ताव तो पारित हो गया लेकिन व्यावहारिक जीवन में अछूतों द्वारा सार्वजनिक स्थानों के उपयोग पर पाबंदी थी। पानी पीने का हक मानवता का है और कानून ने भी इसका समर्थन किया था। इस अधिकार के अनुभव के उद्देश्य से बाबासाहब ने महाड़ के सार्वजनिक चवदार तालाब पर अपना यह अधिकार सिद्ध करने का फैसला किया।......."

"..... जुलूस चवदार तालाब पहुँचा। तालाब का पानी पीने का अधिकार अछूतों को नहीं था। सबसे पहले बाबासाहब ने तालाब से अंजलि भरकर पानी पिया। उसके बाद सारे जनसमुदाय ने चवदार तालाब का पानी पीकर अपना हक हासिल किया। फिर यह जन समुदाय सभा स्थल की ओर वापस आया। सबके चेहरे पर अपार आनंद और उत्साह झलक रहा था।

अछूतों के इस दुस्साहस से पुराणपंथी, सनातनी लोगों का माथा ठनका। अछूत लोग मंदिर में न घुसें इसलिए उन्होंने सभा स्थल पर ही धावा बोल दिया और वहाँ उपस्थित लोगों पर हमला किया। भीड़ ने उन अछूतों को लाठियों से इतना पीटा कि उनमें से अनेक वहीं बेहोश होकर गिर पड़े।......"

"..... इस मारपिटाई की खबर सुनते ही अस्पृश्य प्रतिनिधि जमा हो गये। वे भी सवर्णों पर हमला करने की तैयारी करने लगे। घायल और बेहोश अछूत बंधुओं को देखकर बाबासाहब का खून खौल उठा। लेकिन उन्होंने विवेक से अपने गुस्से को रोका। अपने अनुयायियों से उन्होंने गंभीरता से कहा, इस समय हमें अपने आपको शांत बनाये रखना होगा। हमें न क्रुद्ध होना है और न ही हमें जवाबी हमला करना है। हमें तो मार सहन करनी है और सवर्ण हिंदू लोगों को अहिंसा की ताकत का एहसास कराना है।

बाबा साहब की बात सुनते ही हज़ारो अस्पृश्यों की भीड़ मुसीबत का मुकाबला करने को तैयार हो गयी।

उस भीड़ में अनेक लोग ऐसे भी थे जिन्होंने अफगानिस्तान की लड़ाई में और उसी तरह की अन्य लड़ाइयों में बहादुरी दिखायी थी। अगर उन्होंने जवाबी

हमला किया होता तो सवर्णों को नाकों चने चबाने पड़ते। लेकिन वे शांत रहे।.....”

“..... वारदात के बाद पुलिस और तहसीलदार साहब आये। बाबासाहब ने स्वयं सभी घायलों को अस्पताल पहुँचाया और उनका इलाज करवाया।.....”

“...... अपराधियों पर मुकदमे चलाये गये। नौ मुलजिमों में से पाँच को कठोर कारावास की सज़ा सुनायी गयी।......”

“..... यह सभा मानो दलितों की क्रांति की शुरूआत थी। इस संगठन ने भारत के सामाजिक जीवन में एक नया अध्याय जोड़ दिया। दलित समाज ने पहली बार संघर्ष में हिस्सा लिया था।.....”

हाल ही का एक अनुभव

जब कभी अपना बचपन याद करती हूँ तो गुड्डू का चेहरा सामने आ जाता है। हम रेलवे कॉलोनी में रहा करते थे जहाँ हर प्रांत और जाति के लोग रहते थे। वहाँ पर गुड्डू का एकमात्र परिवार चर्मकार जाति का था। उस समय गुड्डू की उम्र कोई दस वर्ष की रही होगी। मैं अक्सर उसके घर जाती थी। उसके पापा ट्रेन में चाय बेचा करते थे। माँ महार जाति की थी। सिलाई किया करती थी। मोहल्ले के लोग उनकी मदद तो कर देते पर चर्मकार होने के कारण उनसे दूर रहते। न उनके घर जाते न उन्हें अपने घर में आने देते। मेरी माँ भी मुझे मना करतीं कि उनके साथ मत खेलो। उनके घर मत जाओ।

गुड्डू की माँ बच्चों को स्कूल भेजतीं और कोशिश करतीं कि वो अच्छे से पढ़ाई कर ले, ताकि भविष्य में उन्हें कोई अच्छा काम मिल जाए। धीरे-धीरे घर की स्थिति खराब होने लगी। घर की ऐसी स्थिति देखकर गुड्डू और उसके बड़े भाई ने ट्रेन में चाय बेचना शुरू किया। उसका बड़ा भाई स्टेशन के चाय ठेलों पर काम करता। ये दोनों भाई रात के समय काम करने जाते और सुबह स्कूल जाते थे।

गुड्डू ने पाँचवीं पास करके अपने भाई के स्कूल में ही दाखिला ले लिया। इस स्कूल में गुड्डू के ही मोहल्ले के एक शिक्षक भी पढ़ाते थे जिन्हें बच्चे गुरू मास्टर कहा करते थे। वे जब भी कक्षा में आते गुड्डू को उसकी जाति के नाम से पुकारते व कान मरोड़ते थे। गुड्डू इस बर्ताव से बहुत अपमानित महसूस करता। वो शिक्षक से तो कुछ नहीं बोल पाता पर घर में अपनी माँ से अक्सर कहता कि मास्टर उसके साथ कैसा व्यवहार करते हैं और इसलिए वो स्कूल नहीं जाएगा। माँ उसे समझातीं कि पढ़ाई कर लोगे तो भविष्य में तुम्हारे काम आएगी। अपने दुखों का हवाला देती। और गुड्डू फिर स्कूल जाने लगता। पर एक दिन गुड्डू ने अपना निर्णय माँ को सुना दिया कि वो आगे पढ़ाई नहीं करेगा। चाय बेच कर पैसे कमाएगा। उसके बाद गुड्डू कभी स्कूल नहीं गया। कभी-कभी मैं सोचती हूँ कि अगर मैं चर्मकार जाति में पैदा होती तो मैं क्या करती?

पिंकी वर्मा

डॉ. अम्बेडकर का निधन हुए पचास साल बीत चुके हैं। पर हम आज भी यह दावा नहीं कर सकते कि हमारे आसपास तमाम सामाजिक भेदभाव नहीं हैं या हमारे आसपास कोई भी गैर बराबरी से परेशान नहीं है। आज भी दलित बच्चों को स्कूल में कई मुसीबतों का सामना करना पड़ता है। शिक्षक, अन्य साथी आज भी उन्हें बराबरी का नहीं मानते। आज भी वे छोटा-मोटा काम करके अपना जीवन चला पाते हैं। हमारे आसपास कितने ही लोग होंगे जिन्हें रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बिल्कुल बुनियादी चीज़ों के लिए जूझना पड़ता है। इनमें बड़ी संख्या इन्हीं दलित और निम्न समझी जाने वाली जातियों के लोगों की है।

तुम्हें क्या लगता है? क्या हमें जाति के आधार पर छोटा-बड़ा या ऊँचा-नीचा मानना चाहिए? क्या तुम्हारे आसपास इस तरह की घटनाएँ घटती हैं? क्या तुम इनका विरोध करते हो? हमें लिखना हम चकमक के माध्यम से तुम्हारी बात अन्य मित्रों तक पहुँचाएँगे।

भामा एक मशहूर दलित-महिला लेखक हैं। वे 1958 में तमिलनाडु में जन्मीं। उनकी किताब 'करुक्कु' खूब चर्चित हुई। इस किताब का अनुवाद कई भाषाओं में हुआ है। यहाँ इसी किताब के कुछ अंश हम दे रहे हैं। इन अंशों में लेखिका को दलित होने की वजह से स्कूल में किस तरह की मुसीबतें झेलनी पड़ीं, इसका ज़िक्र है। यह सचमुच बहुत ही दुखद बात है कि आज भी हमारे कुछेक स्कूलों में दलित बच्चों से लगभग इसी तरह का व्यवहार हो रहा है।

"...उस वक्त मैं सातवीं में पढ़ती थी। स्कूल की छुट्टी के बाद घर जाने से पहले मैं अक्सर अपनी गली के बच्चों के साथ खेलती रहती। उनमें से कुछ मेरे रिश्ते के भाई-बहन लगते थे। मेरे अलावा कई और बच्चों का भी यही नियम था - स्कूल से छुट्टी के बाद खेलना और फिर घर की ओर रुख करना।

एक दिन हर बार की तरह मस्ती चल रही थी। कुछ बच्चे नीम की डंगालों पर चमगादड़ों की तरह उलटे लटके थे। कुछ देर बाद खेल बदल गया। एक झुका हुआ नारियल का पेड़ था। हम दौड़ लगाकर आते, पेड़ पर चढ़ते और उसकी पत्तियों को छूते। खूब मज़ा आ रहा था। धीरे-धीरे हम एक नारियल भी मरोड़ने लगे। इतने सारे बच्चों ने उसे मरोड़ा, घुमाया कि जब मेरी बारी आई तो वह धप्प से नीचे जा गिरा। वह एक छोटा-सा नारियल था। इतना छोटा कि अभी उसमें पानी भी नहीं भरा था। यह सब इतने अचानक हुआ कि सब बच्चे डर के मारे भाग खड़े हुए। उन्होंने बता दिया कि नारियल मैंने तोड़ा है। नारियल को वहीं छोड़ कर सब घरों की ओर भाग गए।

दूसरे दिन प्रार्थना के समय हेड मास्टर ने मेरा नाम पुकारा। वे बोले-तो तुमने अपनी परया जात दिखा ही दी। सब बच्चों के घर चले जाने के बाद तुमने नारियल चुरा लिया। तुम्हें स्कूल में आने की इजाज़त नहीं है। जाओ, बाहर खड़ी हो जाओ। उस दिन सारे बच्चों के सामने मुझे बड़ी बेइज्जती सहनी पड़ी।

हेड मास्टर चलियार जाति के थे। उन दिनों हमारी और उनकी जाति के लोगों के बीच कोई लड़ाई चल रही थी। सभी बच्चों ने मुझे अजीब-सी नज़रों से देखा और अपनी-अपनी कक्षाओं में चल दिए। मुझे इतना बुरा लगा, इतना दुख हुआ कि समझ न आया क्या करूँ , क्या कहूँ। बाद में मेरी ही गली (वहाँ एक गली में एक ही समुदाय के लोग रहते थे) के एक शिक्षक मेरे पास आए। उन्होंने कहा कि मैं पादरी के पास जाऊँ। उन्हें सारा किस्सा बताऊँ। उनसे चिट्ठी लिखवाऊँ और उसे हेड मास्टर को दूँ। मैंने ऐसा ही किया। सारी बात सुनकर पादरी ने कहा, तुम झुग्गी बस्ती में रहती हो ना? तुमने ऐसा किया ही होगा। मुझे ज़ोर से रोना आ गया। बहुत समय बाद पादरी ने चिट्ठी दी। उसमें लिखा था कि मुझे कक्षा में बैठने दिया जाए। हेड मास्टर को चिट्ठी दिखाने पर उन्होंने मुझे कोसा। कहा कि मैं सारे सम्भव हथकंडे इस्तेमाल कर रही हूँ। और मुझे कक्षा में जाने को कहा। जब मैं कक्षा में गई तो सारे बच्चे मुझे ऐसे घूर रहे थे जैसे मैं चोर हूँ। मुझे इतनी शर्मिंदगी महसूस हुई कि मैं पीछे की बेंच पर बैठ कर खूब रोई।" ●

माथा पच्ची

1

12 को 12 से गुणा करो तो 144 आता है।

इस संख्या को अगर उलट दें तो 21 का वर्ग भी उलट जाता है -

21 x 21 = 441 है न!

क्या कोई और ऐसी संख्या बता सकते हो जिसमें यह गुणा हो?

2

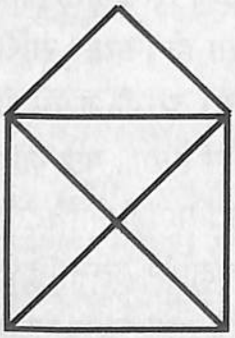

क्या इस आकृति को बगैर किसी लाइन पर दुबारा जाए और बिना हाथ उठाए बनाया जा सकता है?

3

A, B, C, D, E, F कुल मिलाकर छह रास्ते हैं। पर सिर्फ एक रास्ता है जो सीधे खिलौनों तक जाता है। देखें तुम कितनी जल्दी उस रास्ते को ढूँढ पाते हो?

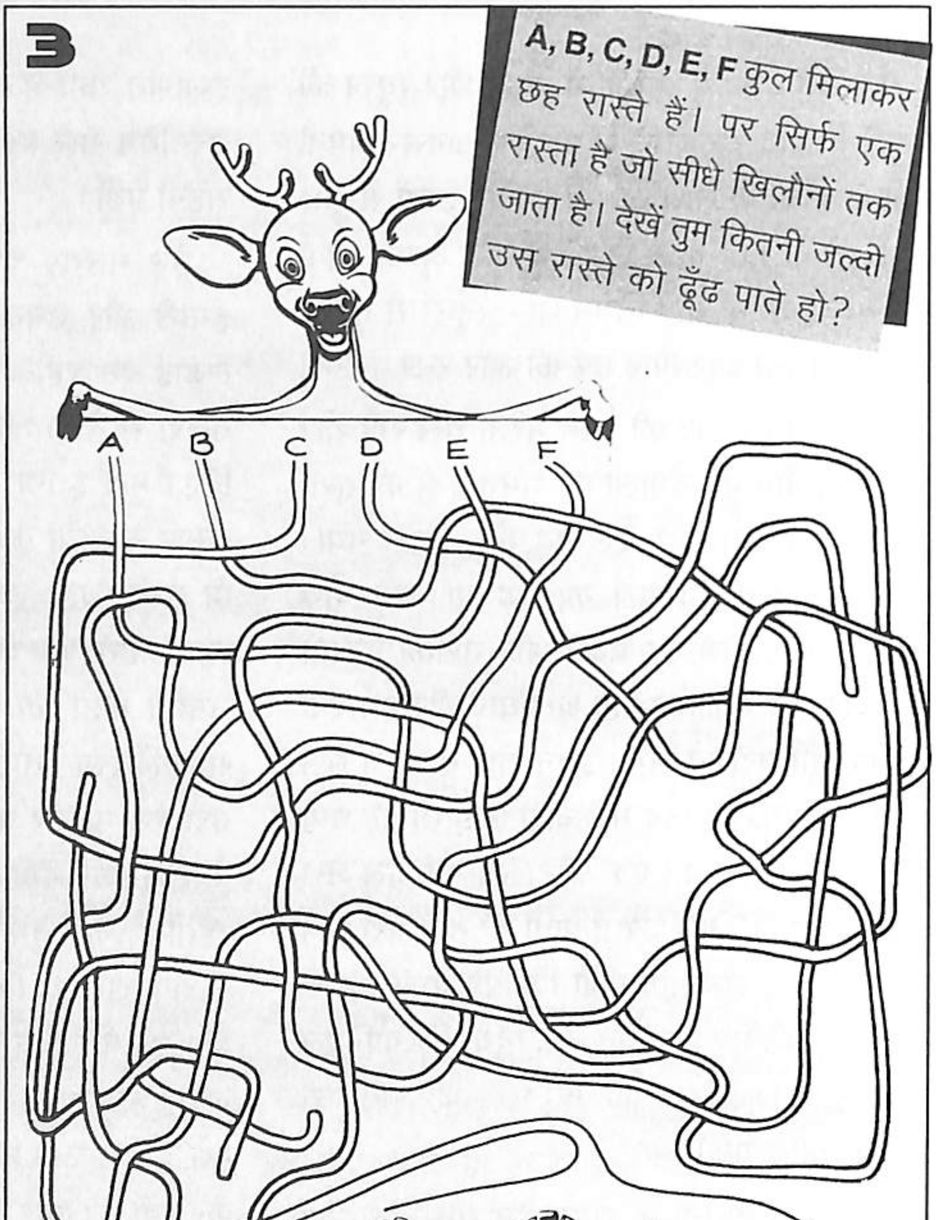

4

इन पेड़ों के पीछे कुछ लोग छिपे हैं। कितने? पता नहीं। हाँ, पर एक चीज़ है जिससे उनकी संख्या का पता चल सकता है। उनकी आँखें इन पेड़ों से झाँक रही हैं। ध्यान से देखो! क्या तुम सिर्फ दो मिनिट में कम से कम दस जोड़ी आँखें ढूँढ सकते हो?

5 एक रस्सी को एक बार काटो तो उसके दो टुकड़े हो जाते हैं। अगर एक रस्सी के सात टुकड़े करना हों तो उसे कितनी बार काटना पड़ेगा?

6
इन दो चित्रों को ध्यान से देखो। क्या तुम सिर्फ पाँच मिनिट में इनमें दस अंतर ढूँढ सकते हो?

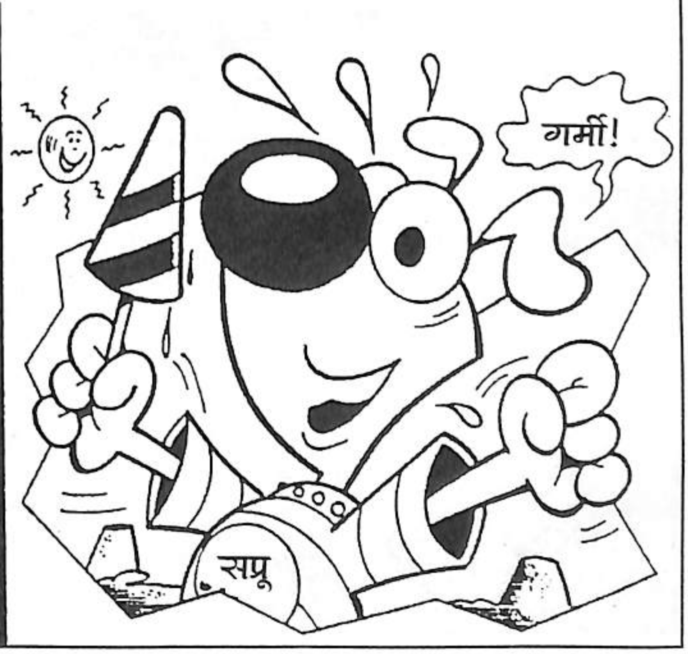

जीना इसी का नाम है...

व्यंग्य चित्र - गौतम चक्रवर्ती

लालूजी - नमस्कार कालूजी!

कालूजी - मैं बेवकूफों को नमस्कार नहीं करता।

लालूजी - भैया, हम तो कर लेते हैं।

महेश - माँ, आज मैं स्कूल नहीं जाऊँगा।

माँ - क्यों?

महेश - वहाँ कोई मुझे पसन्द नहीं करता।

माँ - तुम्हें जाना ही पड़ेगा बेटा! आखिर तुम स्कूल के प्रिंसिपल हो।

बस में एक यात्री दूसरे यात्री से - आप मेरी जगह पर बैठ गये हैं।

दूसरा यात्री - आप कैसे कह सकते हैं कि यह जगह आपकी है?

पहला यात्री - उठकर देखिए। मैंने यहाँ दो सड़े केले रखे थे।

ढब्बूजी

आबिद सुरती

चकमक सदस्यता फॉर्म

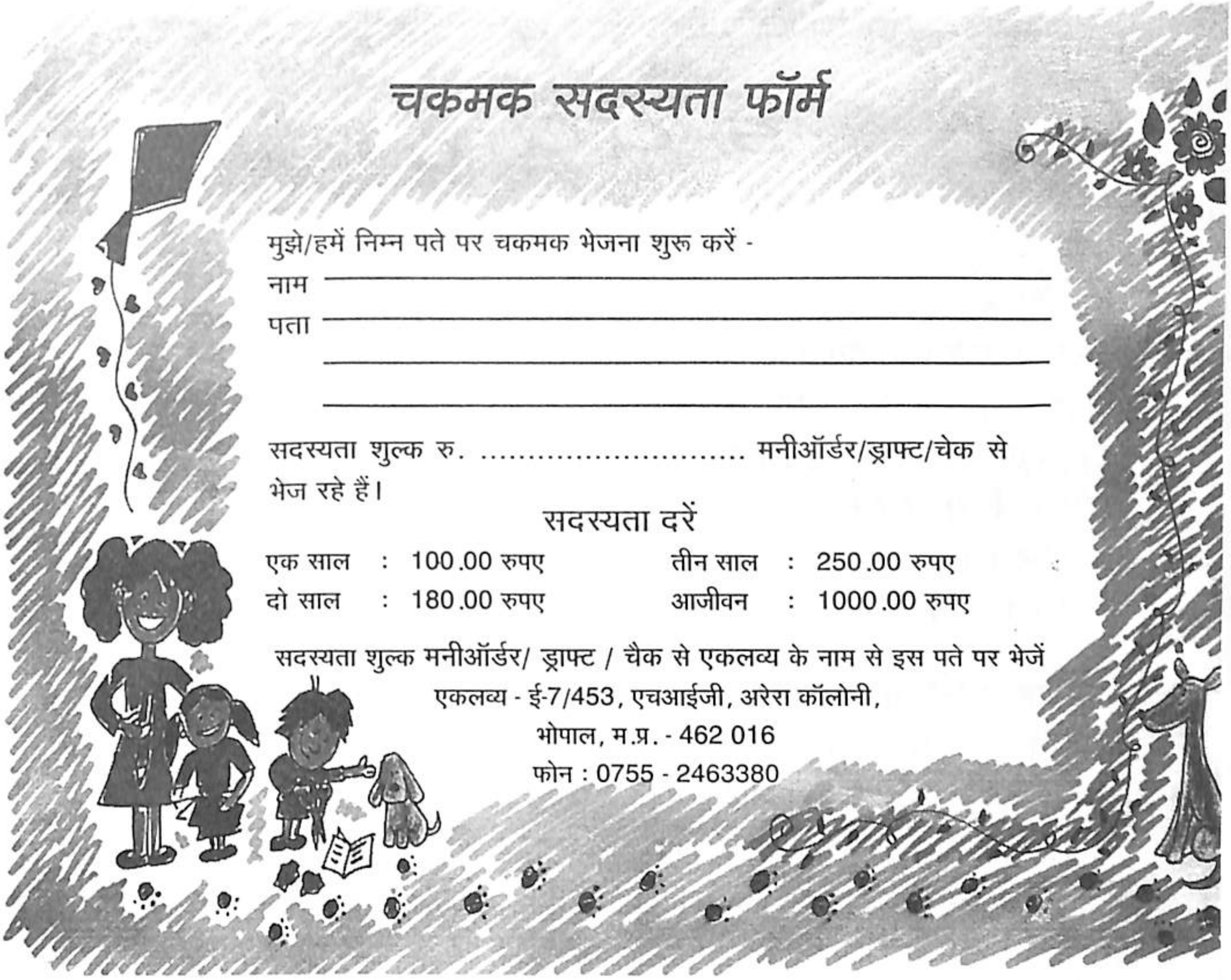

मुझे/हमें निम्न पते पर चकमक भेजना शुरू करें -

नाम ____________________

पता ____________________

____

____

सदस्यता शुल्क रु. .... मनीऑर्डर/ड्राफ्ट/चेक से भेज रहे हैं।

सदस्यता दरें

एक साल	: 100.00 रुपए	तीन साल	: 250.00 रुपए
दो साल	: 180.00 रुपए	आजीवन	: 1000.00 रुपए

सदस्यता शुल्क मनीऑर्डर/ ड्राफ्ट / चैक से एकलव्य के नाम से इस पते पर भेजें

एकलव्य - ई-7/453, एचआईजी, अरेरा कॉलोनी,
भोपाल, म.प्र. - 462 016
फोन : 0755 - 2463380

मार्च 2006 अंक की माथापच्ची एवं चित्र पहेली के हल

1. B - वाला!
2. 10 है न!
3. फुग्गे को कप के अंदर डालकर उसे फुला दो। इतना फुलाओ कि फुग्गा कप के बीच ठीक से फँस जाए। बस अब गुब्बारे के साथ कप ऊपर उठ जाएगा।

   ऐसे ही शरबत पीने वाली नली को कप की तली में रख उसके एक छोर से हवा खींचो। हवा खींचने से कप की तली नली में चिपक जाएगी। बस इसे खींचे रखकर कप का ऊपर उठाया जा सकता है।

द	वा		गो	भी		क
म		दि	ल		कु	श्ती
क	न्है	या		अ	ली	
ल		वा	दा	म		क
	पा	ती		रू	मा	ल
ना	न		ई	द		
ग		ला	ख		म	ग

ई-पेपर

राजश्री

क्या तुम ऐसे कागज़ की कल्पना कर सकते हो, एक बटन दबाते ही जिस पर छपा हुआ सब कुछ मिट जाये? और एक बटन दबाते ही उस पर दूसरा पन्ना छप जाये? या जिस पर हम जो चाहे लिख लें और फिर स्लेट की तरह पोंछ लें। और फिर लिख लें, और फिर पोंछ लें।

क्या यह कोरी कल्पना है?

नहीं, यह कोरी कल्पना नहीं है। यह कल्पना बहुत जल्दी सच हो सकती है। इस तरह के कागज़ का नाम है इलेक्ट्रॉनिक कागज़ जिसे हम ई-कागज़ भी कह सकते हैं।

दरअसल यह कागज़ एक स्क्रीन होगी जिसे कम्प्यूटर से जोड़ दिया जाएगा। बस फिर उस पर जो मर्ज़ी आये लिखो और जितनी बार चाहो मिटाओ।

पिछले दस साल से वैज्ञानिक और इंजीनियर ई-कागज़ बनाने में जुटे हुए हैं और अब उनकी मेहनत के परिणाम भी दिखाई देने शुरू हो गये हैं। सन् 2003 में अमरीका के वैज्ञानिकों ने एक ऐसा कम्प्यूटर स्क्रीन बनाने में कामयाबी हासिल कर ली जो बेहद पतला (मनुष्य के तीन बालों के बराबर मोटा) है, जिसे मोड़ा जा सकता है और लपेटा भी जा सकता है। और फिर भी जिसके सफेद परदे पर काली लिखावट उतनी ही साफ दिखाई देती है जितनी कि किसी लैपटॉप कम्प्यूटर के स्क्रीन पर। यह ई-पेपर के निर्माण की दिशा में पहला कदम था।

संसार के अनेक देशों में अनेक कम्पनियाँ इस दिशा में प्रयास कर रही हैं। खबर है कि कुछ कंपनियों ने ऐसा पेपर स्क्रीन भी बना लिया है जिस पर रंगीन चित्र भी देखे जा सकते हैं। इतना ही नहीं, इस पर वीडियो या चलचित्र भी देखे जा सकते हैं। जापान की फुजित्सु नामक कम्पनी इस साल के अंत तक अपना रंगीन ई-कागज़ बाज़ार में उतार सकती है।

क्यों ज़रूरत पड़ी ई-कागज़ की?

कम्प्यूटर के स्क्रीन की अपनी सीमाएँ हैं। इसे नरम और हल्का, कम बिजली खानेवाला और खासकर सस्ता कैसे बनाया जाये, बस इसी विचार से ई-कागज़ की कल्पना ने जन्म लिया। सोचो, यदि वैज्ञानिक इसमें सफल हो गये तो रोज़ का अखबार हरेक के लिए अलग-अलग कागज़ पर नहीं छापना पड़ेगा। ई किताबें आ गयीं तो न बाज़ार से हर साल किताबें खरीदना पड़ेंगी और न भारी बस्ता लेकर स्कूल जाना पड़ेगा। रसीद, कैलेण्डर, विज्ञापन, प्रचार सामग्री, नक्शे वगैरह सब कुछ ई-कागज़ पर आ जाएगा। खबर तो यह भी है कि कम्प्यूटर की ऐसी स्क्रीन बाज़ार में आ जाएगी जिसे आप अपने कपड़ों पर सी सकें। हो गयी न हद!

लेकिन सोचो, अगर किसी दिन सचमुच ऐसा हो गया तो सारी दुनिया के छापाखानों और प्रकाशन गृहों का क्या होगा? क्या सारी दुनिया के अखबार बन्द हो जायेंगे? और पुस्तकालय? उनका क्या होगा? बार-बार लिखी जा सकने वाली ई-पुस्तकें बन गयीं तो क्या सारी दुनिया के पुस्तकालय फालतू हो जायेंगे? और उन दफ्तरों का क्या होगा जहाँ हर मेज़ पर फाइलों के ढेर लगे रहते हैं? और भैया, बिना कागज़ के अम्मा सिगड़ी कैसे जलाएँगी? और चने, मूँगफली बेचनेवाला ठोंगे किस चीज़ से बनाएगा?

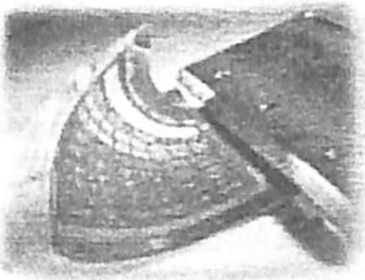

वैज्ञानिकों का कहना है कि कागज़ का प्रयोग पूरी तरह समाप्त हो जाना तो निकट भविष्य में संभव नहीं है, हाँ लेकिन उसके उपयोग में काफी कमी आ जाएगी। तुम तो जानते हो कि कागज़ बनाने के लिए बड़ी संख्या में पेड़ काटे जाते हैं। उन्हीं की लुगदी से कागज़ बनाया जाता है। अगर कागज़ बनाने के लिए पेड़ों की कटाई कम हो गयी तो धरती भी काफी हरी-भरी हो जाएगी। ई-कागज़ को छपाई और संचार के क्षेत्र में अगली क्रांति माना जा रहा है। पर्यावरण की रक्षा की दृष्टि से भी हमें इसका स्वागत करन चाहिए।

और यह सब हो गया, तो ऐसा भी तो हो सकता है कि तुम्हारी प्रिय पत्रिका चकमक भी ई-कागज़ पर मिलने लगे! बटन दबाया और चकमक का नया अंक सामने आ गया। अच्छा रहेगा न? ●

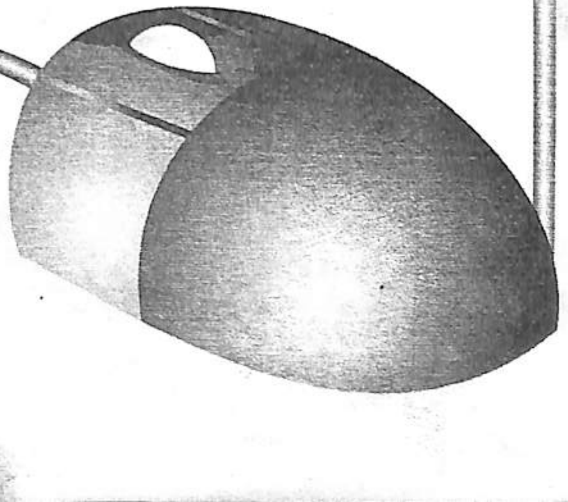

तितली बनाओ

ज़रूरत की चीज़ें - एक मोटा कागज़, एक कैंची, गोंद, सजावट का सामान

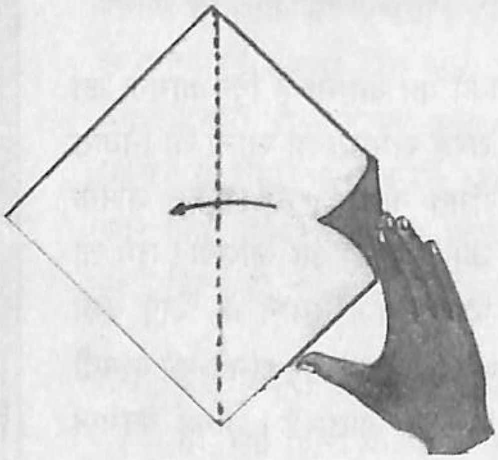

बीच से चित्रानुसार मोड़ बना लो।

इस तरह कोने को पकड़कर ...

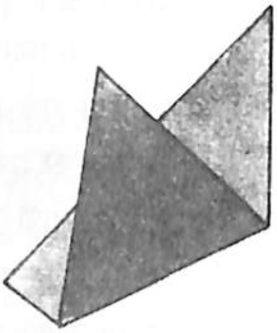

इस तरह

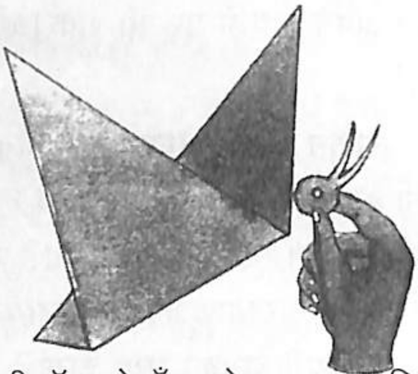

एक मोटे कागज़ पर इस आकृति को उतारकर गोंद या फेवीकॉल से मुँह को इस तरह चिपका दो।

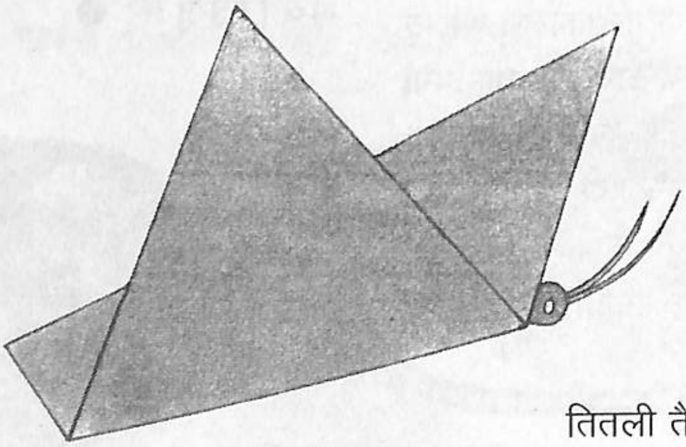

तितली तैयार है।

सा रे गा मा

- राजेश उत्साही

तो भई परीक्षा से फारिग हो गए! पेपर अच्छे गए हों तो बधाई! न गए हों तो कोई बात नहीं। यह आखिरी परीक्षा तो नहीं थी! चलो अब यह बताओ कि यह कॉलम कैसा लग रहा है!

इस बार बिल्कुल अलग मूड का गीत। हँसी हमारे जीवन की अनमोल धरोहर है। कहते हैं हँसी मुफ्त मिलती है। खुलकर हँसना स्वास्थ्य के लिए अच्छा रहता है।

तुमने कभी फूलों को या सूरज को हँसते देखा है? नहीं न! लेकिन इस गीत में ऐसी ही कल्पनाएँ की गई हैं। वास्तव में जैसे हँसी हमारे भीतर ही कहीं छिपी होती है, वैसे ही फूलों या सूरज के हँसने का अहसास भी हमारे भीतर होता है। ज़रूरत है उसे महसूसने और बाहर लाने की।

'मिली' का यह गीत फिल्म में जया भादुड़ी पर फिल्माया गया है। जया भादुड़ी ने एक ऐसी अल्हड़ किशोरी का रोल निभाया है, जिसे कैंसर है। उसे गुपचुप तरीके से यह भी पता है कि बीमारी लाइलाज है। लेकिन वह बेपरवाह अपना जीवन ज़िंदादिली से जीती है। कुछ इस तरह गाते हुए...

मैंने कहा फूलों से-2
हँसो तो वो खिलखिला के
हँस दिए
और ये कहा जीवन है
भाई मेरे भाई
हँसने के लिए
हो मैंने कहा फूलों से
हँसो तो वो खिलखिला के हँस दिए
और ये कहा जीवन है
भाई मेरे भाई हँसने के लिए

सूरज हँसा
तो बिखर-बिखर गईं
किरणें-2
सूरज
हँसा रे
किरण-किरण चुनकर धरती ये
सजके सुनहरी बन गई रे
मैंने कहा
हो मैंने कहा सपनों से
सजो तो वो मुस्कुरा के सज गए
और ये कहा जीवन है
भाई मेरे भाई
सजने के लिए
सजने के लिए
मैंने कहा...

ये शाम तो
यूँ हँसी
जैसे हँसी
दुल्हन-2
ये शाम तो
नीले-नीले साँवले अंबर में
रंग जो गुलाबी लगे भरने
मैंने कहा
मैंने कहा रंगों से
रंगों तो वो जग ये सारा रंग गए
और ये कहा जीवन है
भाई मेरे भाई
रंगने के लिए
रंगने के लिए
मैंने कहा...

मौसम मिला
वो कहीं एक दिन मुझको-2
मौसम मिला रे
मैंने कहा रुको खेलो
मेरे संग तुम
मौसम भला रुका जो
हो गया गुम
मैंने कहा अपनों से
चलो तो वो साथ मेरे चल दिए
और ये कहा जीवन है
भाई मेरे भाई चलने के लिए
चलने के लिए
मैंने कहा...

फिल्म - मिली (1975)
गीतकार - आनंद बक्षी
संगीतकार - सचिन देव बर्मन
गायक - लता मंगेशकर व साथी

चित्र पहेली

इस बार चित्र पहेली में
तुम्हें थोड़ी ढुँढाई भी करना है। हाँ,
और बाएँ से दाएँ का संकेत →
और ऊपर से नीचे का ↓ है।
तो शुरू करें ...

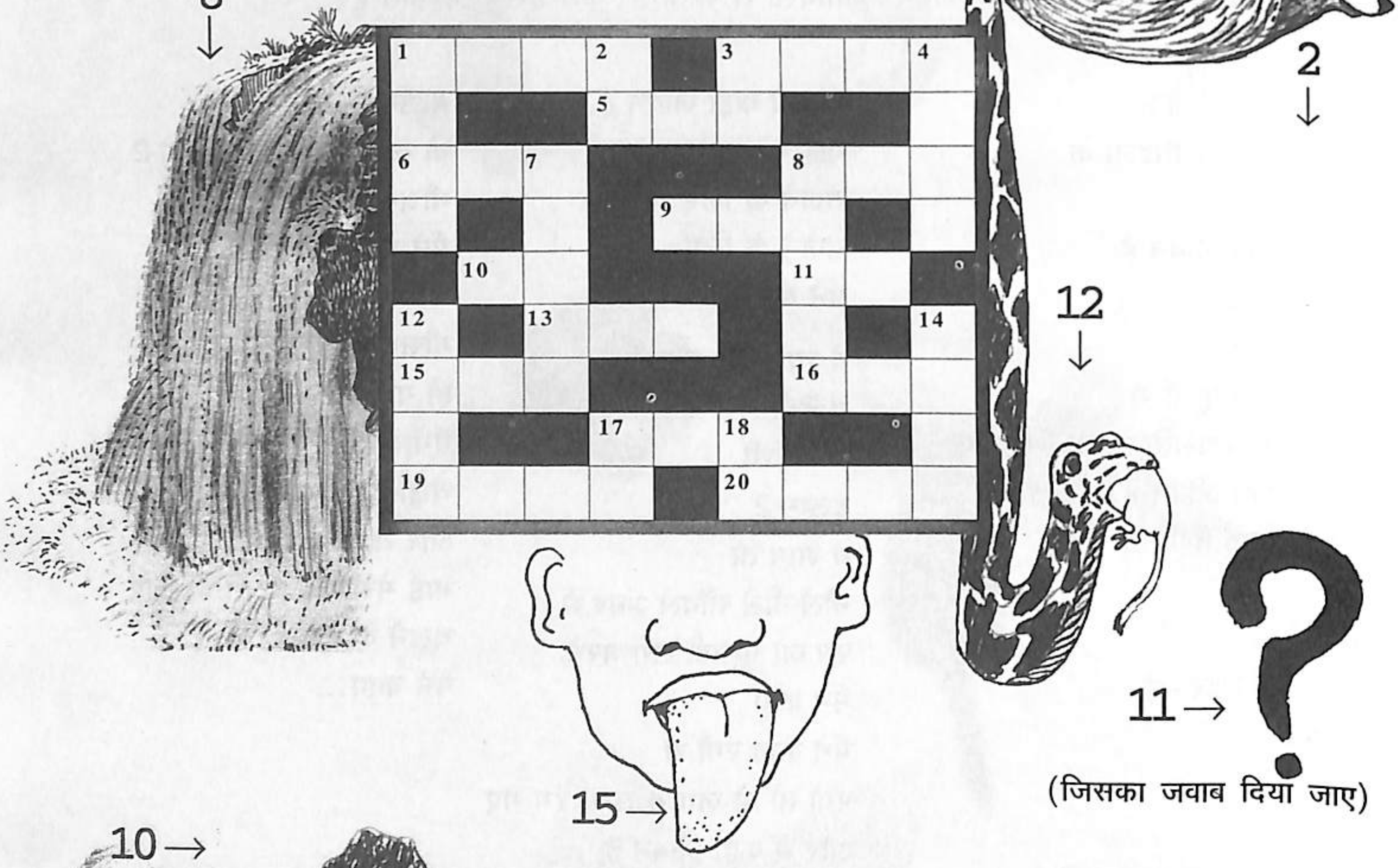

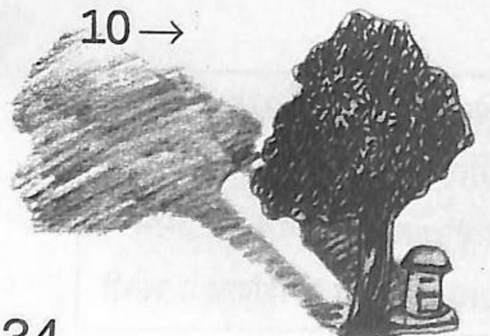

4↓ सिक्के गढ़ने की जगह

17↓ सवा + सवा + आधा =

18↓ 'कबीर' में है (अक्टूबर-नवम्बर में बोई जाने वाली फसलें)

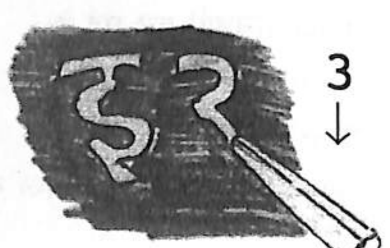

1→

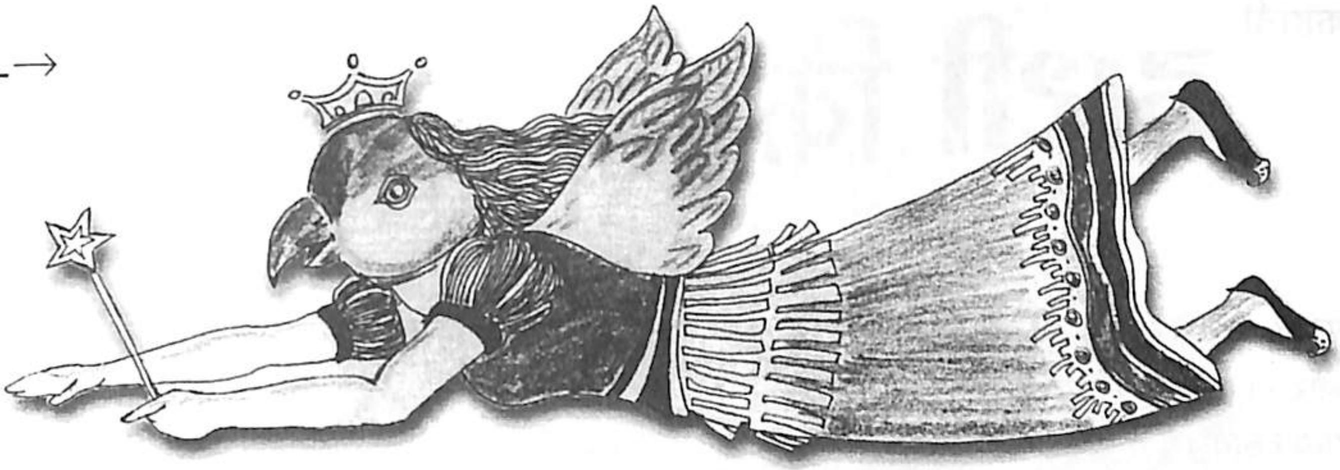

1
↓

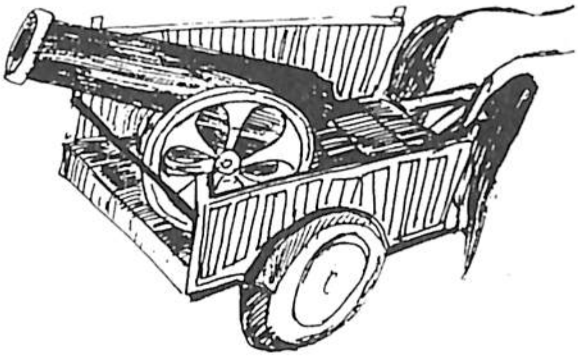

6→ 'गायब पालि' में है एक मशहूर शायर

8→ 'जलसाज' में है बैठक, महफिल

16→ रूई कातने के काम आनेवाली चीज़

17→ 'तरतीब' में से ढूँढ निकालो एक पक्षी

19→ 'माली नहर' में है एक संगीतकार

20→ सम्राट अकबर के नौ रत्नों में से
एक हाज़िर जवाब

3→

14
↓

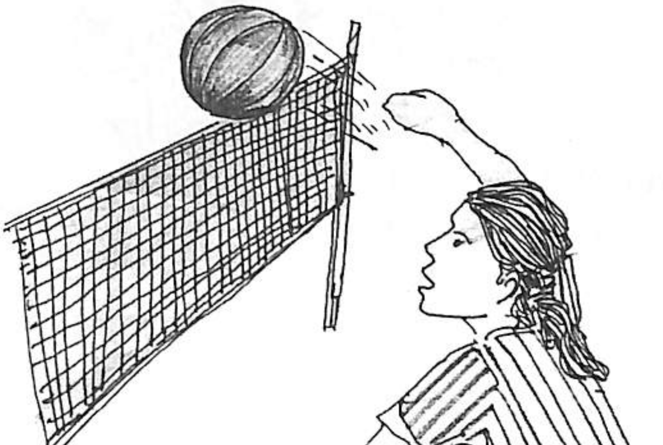

7
↓

कहानी

हाथी कितना भारी?

आर.के. मूर्ति

राजा की आँखें लाल हो रही थीं। उसके गाल भी। और नाक भी। राजा के नथुने फूले। राजा की मूँछें फड़फड़ायीं।

"गधो! तुम सब के सब मूर्ख हो। तुम एक हाथी का वज़न नहीं मालूम कर सकते हो? जानते नहीं मैं उसे कितना प्यार करता हूँ?" राजा गुस्से में चीखा।

सारी सभा चुप रही। कौन बोले? क्या बोले? वे राजा को अच्छी तरह जानते थे। राजा दयालु और नेक था। लेकिन कभी कभी उस पर सनक सवार हो जाती थी। तब वह ऐसे ही ऊँटपटाँग काम बताया करता था। जाओ, मेरे प्यारे हाथी को तौलकर आओ और मुझे उसका वज़न बताओ।

"मुझे अपने प्यारे हाथी का वज़न मालूम होना ही चाहिए। अगर उसका वज़न एक जैसा रहा तो इसका मतलब उसकी सेहत अच्छी है, और अगर वज़न कम होता जा रहा हो.... तो समझते क्यों नहीं हो बेवकूफो।"

सारे दरबारी चुपचाप हाथ बाँधे खड़े रहे। राजा के दर्शनों के लिए आए लोग भी चुपचाप खड़े रहे। कौन बोले? क्या बोले?

तभी एक नौजवान मेहमान ने हाथ उठाकर कहा- "मैं बता सकता हूँ हाथी का वज़न।" सारी सभा पलटकर उस नौजवान को देखने लगी।

राजा ने आश्चर्य और खुशी से पूछा- "क्या सचमुच तुम मेरे हाथी का वज़न बता सकते हो?

"जी हाँ। बस आप मुझे एक नाव दिलवा दीजिए। इतनी बड़ी और मज़बूत कि जिसमें हाथी खड़ा हो सके। फिर मैं आपको हाथी का वज़न बता दूँगा।"

राजा ने नौजवान पर विश्वास कर लिया।

राजा का आदेश मिलते ही राज्य के अच्छे से अच्छे बढ़ई हाथी के लिए नाव बनाने में जुट गये।

जब नाव बनकर तैयार हुई तो एक दिन शुभ मुहुर्त में उसे धूमधाम से झील में उतारा गया। नाव किनारे से सटी हुई थी और मोटे-मोटे रस्सों से बँधी हुई थी।

महावतों को आज्ञा दी गयी कि हाथी को नाव पर चढ़ाया जाये।

हाथी के पैर रखते ही नाव थोड़ा डगमगाई लेकिन उसने हाथी का वज़न झेल लिया। एक-एक करके हाथी ने चारों पैर नाव में रख दिये और सीधा खड़ा हो गया।

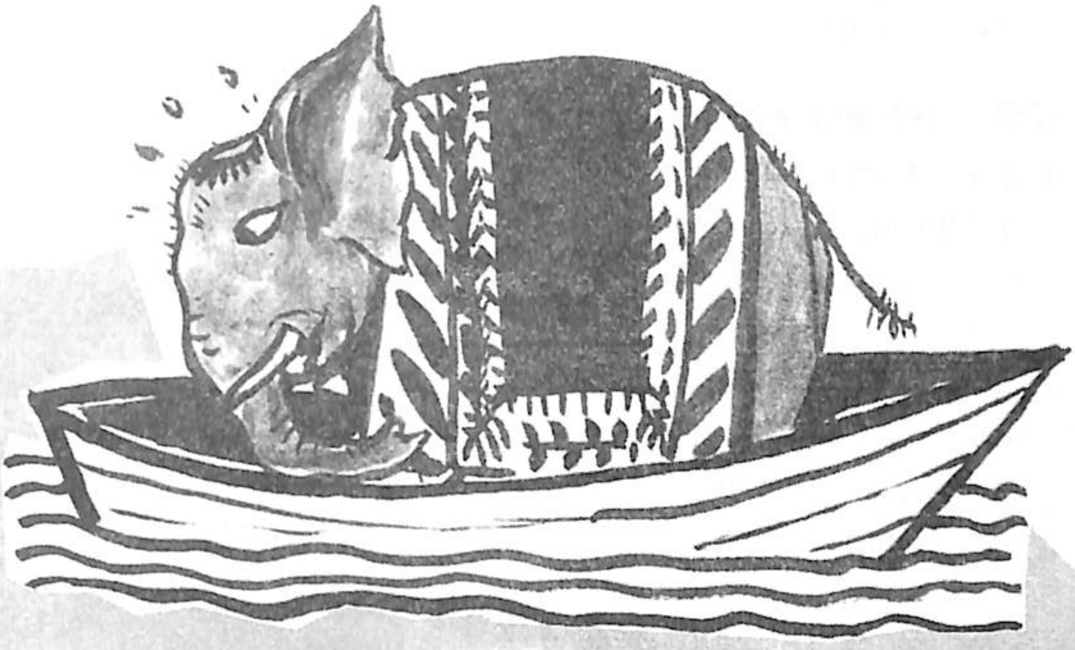

हाथी के भार से नाव लगभग दो तिहाई पानी में डूब गयी। नौजवान ने एक कील से नाव की दीवार पर उस जगह निशान लगा दिया जिस जगह तक पानी उस पर चढ़ा था।

नौजवान के कहने से हाथी को धीरे-धीरे नाव से उतारा गया। "पत्थर लाओ। नाव में पत्थर भरो।" नौजवान ने चिल्लाकर कहा।

मजदूर जुट गये और तगारियों में पत्थर ला-लाकर नाव में डालने लगे।

नौजवान ने तब तक नाव में पत्थर भरवाये जब तक नाव उसके लगाये निशान तक, एक बार फिर पानी में नहीं डूब गयी।

झील के किनारे खड़ी भीड़ बड़ी उत्सुकता से नौजवान की हरकतों को देख रही थी।

खुद राजा दूर पालकी में बैठा सब कुछ देख रहा था। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि आखिर नौजवान कर क्या रहा है।

इसके बाद नौजवान ने सारे पत्थर नाव से उतरवाए और उनके सात बड़े-बड़े ढेर लगवा दिए।

इसके बाद एक बड़ा-सा तराजू लाया गया और पत्थर के सातों ढेरों को तोला गया।

हाथी ने जितना पानी हटाया था, पत्थरों ने भी उतना ही पानी हटाया था। पत्थरों का जितना वज़न था, उतना ही वज़न हाथी का था।

नौजवान ने बड़े विश्वास से बताया कि उसके हिसाब से हाथी का वज़न कितना है। राजा बुद्धिमान था। उसे बात तुरंत समझ में आ गयी।

राजा ने नौजवान की पीठ थपथपायी और उसे ढेर सारा पुरस्कार दिया। ●

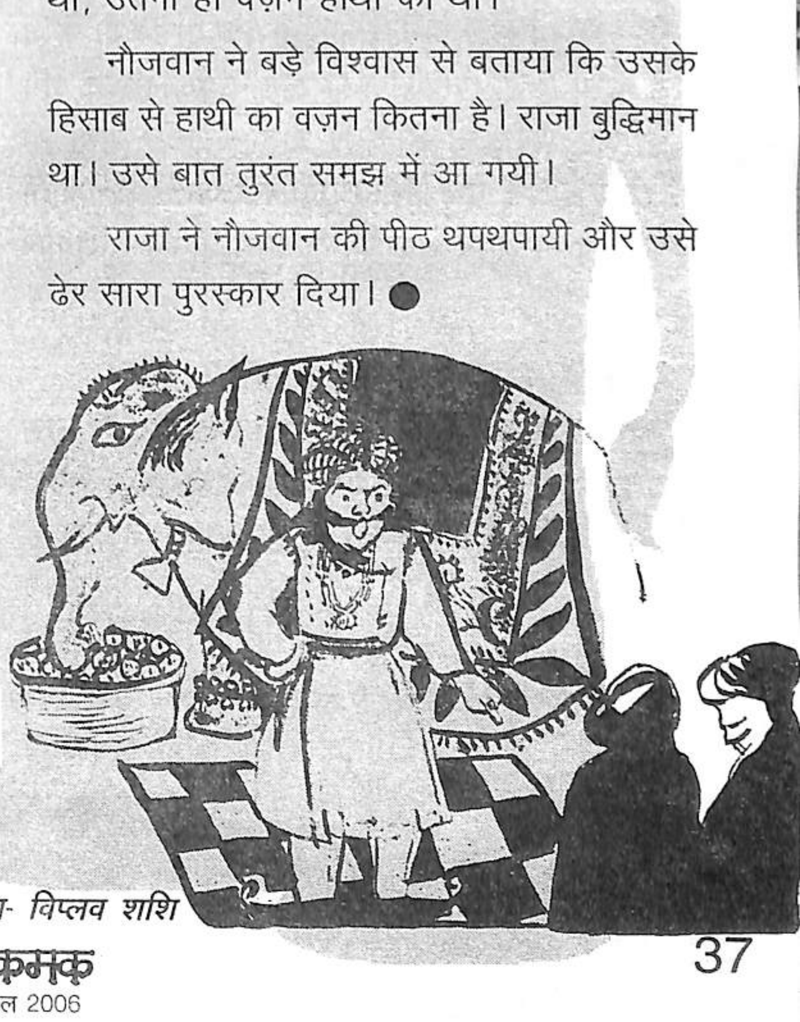

चित्र- विप्लव शशि

खबर विलुप्त हो रहे जीवों की

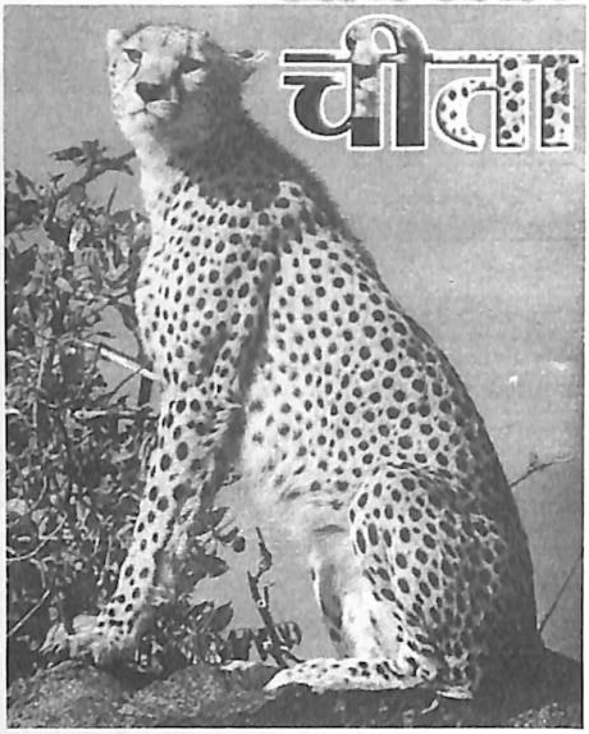

चीते में क्या खास बात है?

अरे वो तो चीते के माफिक है! एक फुर्तीले और तेज़ व्यक्ति के लिए हम अक्सर ऐसा कहते हैं। तुमको यह जानकर अचरज होगा कि चीता ज़मीन पर पाए जाने वाले जंतुओं में सबसे तेज़ दौड़ने वाला प्राणी है। यह लगभग 113 किलोमीटर प्रति घंटे के हिसाब से दौड़ता है। है न मज़ेदार बात! हाँ, लेकिन इस रफ्तार से इसके साथ यह बात भी जुडी हुई है कि यह ज़्यादा देर तक या यों कहें कि ज़्यादा दूरी तय नहीं कर सकता। दौड़ेगा काफी तेज़ लेकिन एक बार में 150-300 मीटर से ज़्यादा नहीं। जितना तेज़ दौड़ता है उतना ही जल्दी थक भी जाता है।

चीता एक मांसाहारी जीव है और अपना भोजन शिकार करके पाता है। शाकाहारी जीव खासकर हिरण, छोटे बारहसिंगा और खरगोश आदि इसके प्रिय शिकार हैं। जब शिकार इसके दायरे या पहुँच में होता है तो फिर उसकी खैर नहीं। लेकिन यदि शिकार चीते की दौड़ से बाहर निकल गया तो उसके बचने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। चीता कभी-कभी अपने साथियों के साथ मिलकर शिकार करता है।

कैसे दौड़ लेता है चीता इतना तेज़?

यह सवाल उठना तो जायज़ ही है! इस सवाल पर गौर करते हैं। इसका सीधा-सादा जवाब तो यही है कि इसके शरीर की बनावट इस तरह की होती है कि यह तेज़ दौड़ सके। चीते का बदन काफी छरहरा-सा किंतु ताकतवर होता है। इसकी हड्डियों और पेशियों के साथ ही इसके पंजे और टांगें तेज़ दौड़ने के अनुकूल होती हैं। कभी तुम टीवी में चीते को दौड़ लगाते हुए देखना। जब यह दौड़ता है तो इसका शरीर स्प्रिंग की माफिक फैलता और सिकुड़ता है।

चीते के पंजों के नाखूनों की एक खूबी यह होती है कि ये फिक्स होते हैं। और यह दौड़ लगाता है तो ये नाखून ज़मीन के साथ पकड़ बनाने में मदद करते हैं। जैसा कि तुमने खेलों के लिए विशेष रूप से तैयार किए जूतों के तलवों में स्पाईक यानी काँटेनुमा उभार देखे होंगे।

गुज़रे ज़माने की बात हुआ चीता

यदि तुमसे कहा जाए कि चीता अब भारत में नहीं पाया जाता तो शायद तुम भरोसा नहीं करोगे। लेकिन बदकिस्मती से यह सच है। एक ज़माने में यह भारत के घास के मैदानों में पाया जाता था। दरअसल चीता तो एशिया महाद्वीप से ही खत्म हो चुका है। हालाँकि ईरान में चीते के पाए जाने की खबरें हैं। लेकिन ये खबरें कितनी प्रामाणिक हैं यह कहा नहीं जा सकता। ऐसी जानकारी मिलती है कि

भारत में चीते की अन्तिम तस्वीर सन 1948 में खींची गई थी। तब कोरवाई रियासत के महाराज ने जीप की रोशनी से भ्रमित हुए तीन चीतों का शिकार किया था। एक और खबर जो चौंकाने वाली है वह यह है कि चीता आज में भारत के किसी भी चिड़ियाघर में नहीं है। चीते वर्तमान में अफ्रीका के जंगलों में हैं लेकिन वहाँ भी इनकी संख्या काफी कम हो गई है।

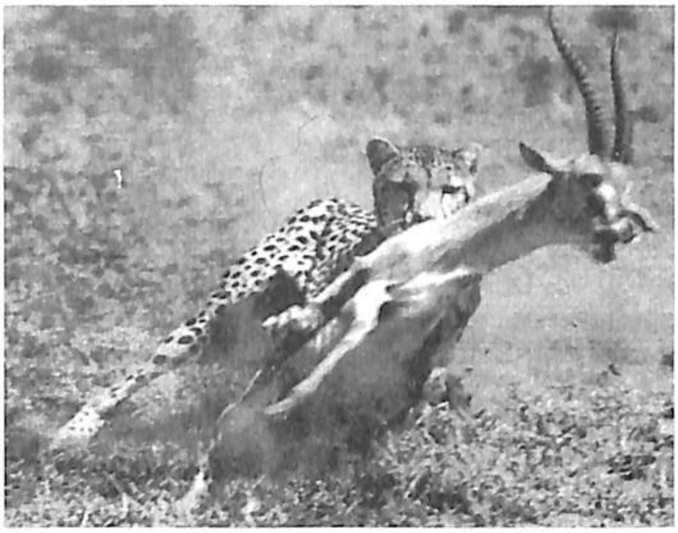

कैसे करें चीते की पहचान?

चीते को कुछ आसान तरीकों से पहचाना जा सकता है।

- चीते के शरीर पर छोटे-छोटे गहरे काले धब्बे होते हैं।
- इसके होठों के कोनों से से आँख तक खिंची हुई काली पट्टियाँ होती है।
- इसके पंजे में बाहर की ओर निकले नाखून होते हैं। कभी तुम पालतू बिल्ली के नाखूनों को ध्यान से देखना। बिल्ली की खूबी यह होती है कि यह अपने नाखूनों को पंजों के अंदर भींच लेती है।

चीता क्यों खत्म हो गया?

इस सवाल की तह में जाने पर पता चलता है कि चीते का काफी तादाद में शिकार किया गया। राजा-महाराजा चीते, बाघ आदि का शिकार करके अपने आपको बहादुर साबित किया करते थे। तब यह चलन था कि किसने कितने शेर, चीते मारे। चीते के खत्म होने का एक कारण यह भी है कि इसके रहवास खत्म होते गए। अब तो सचमुच ही चीता टीवी या चित्रों में ही देखने को मिल सकता है। हां, कई बार हमारे यहाँ पर भी अखबारों में खबर आ जाती है कि फलाँ जगह पर चीता दिखाई दिया। तो क्या तुम भरोसा कर लोगे?

चीते के जीवन के बारे में कुछ और दिलचस्प बातें -

- *बच्चे पैदा करने का समय पूरे साल भर*
- *गर्भधारण - लगभग तीन माह*
- *बच्चे - एक बार में तीन बच्चों को मादा जनती है।*
- *जन्म के समय बच्चे का वजन* - 170 से 311 *ग्राम*
- *बच्चे की जन्म के समय आँखें बंद रहती है। लगभग* 4 *से* 11 *दिनों के दौरान आँखें खोलता है।*
- *बच्चा माँ का दूध लगभग तीन महीने तक पीता है।*
- *इसकी उम्र लगभग* 12 *साल की होती है।*

आशाओं की डगर पर, विकास के सफ़र पर

प्रदेश में महिला सशक्तीकरण का नया दौर आया है-

- माध्यमिक कक्षाओं की 46 लाख बालिकाओं को निःशुल्क गणवेश और किताबें वितरित
- नवीं कक्षा में जाने वाली 70 हज़ार से ज्यादा बालिकाओं को मुफ्त साइकिल।
- नवीं कक्षा में प्रवेश पाने वाली अनुसूचित जनजाति की छात्राओं को 1 हज़ार रुपये और 11वीं कक्षा में प्रवेश पर 2 हज़ार रुपयों की प्रोत्साहन राशि।
- उच्च शिक्षा के बढ़ावे के लिये हर गांव से प्रथम आने वाली 12वीं कक्षा की छात्रा के लिए छात्रवृत्ति, गांव की बेटी योजना के तहत।
- अनुसूचित जाति, जनजाति वर्ग की 50 हजार कन्याओं को कन्या साक्षरता योजना का लाभ।
- प्रसव पूर्व परिवहन एवं उपचार योजना के तहत सुविधायुक्त अस्पताल में प्रसव और मुफ़्त उपचार।
- स्वशक्ति योजना के तहत नौ ज़िलों में 2462 समूहों का गठन।
- महिला सशक्तीकरण के तहत स्वसहायता समूहों की मदद से आंगनवाड़ियों में पूरक पोषणाहार वितरण।
- निजी महिला चिकित्सकों के सहयोग से निशुल्क सुरक्षित मातृत्व और परिवार कल्याण के लिए वन्दे मातरम् योजना।
- 41 विकासखण्डों में नये सामुदायिक विकास केन्द्र, चौबीस घंटे सामान्य प्रसव के लिए पांच सौ अस्पताल चिह्नित।
- नर्सों के अनेक नये पद।
- जननी सेवा योजना का विस्तार।
- महिलाओं पर अत्याचार रोकने, उन्हें सामाजिक आर्थिक मजबूती देने 6 जिलों में तेजस्विनी ग्रामीण महिला सशक्तीकरण योजना।
- स्वयंसिद्धा योजना का विस्तार, स्वरोजगार के लिये, स्व सहायता समूहों के आंदोलन को गति।

ये सब काम दिखाते, प्रदेश में बेहतर होते समाज की बुनियाद

बदलते वक़्त की आहट

मध्यप्रदेश

शिवराज सिंह चौहान
मुख्यमंत्री

हमारी परम्परा महिलाओं को शक्ति मानती है। किसी भी समाज की प्रगति का वे आधार होती हैं। हम महिलाओं की उन्नति को एक पक्षीय कार्यक्रम नहीं मानते बल्कि विकास में उनकी बराबर की भागीदारी चाहते हैं। हमारा मानना है कि स्त्री शक्ति के सम्मान और विकास में उनके योगदान के आधार पर ही हम एक बेहतर समाज बना सकेंगे।

जनसंपर्क/मध्यप्रदेश माध्यम/06

वि.क्र. D64851 दि. 8/03/2006

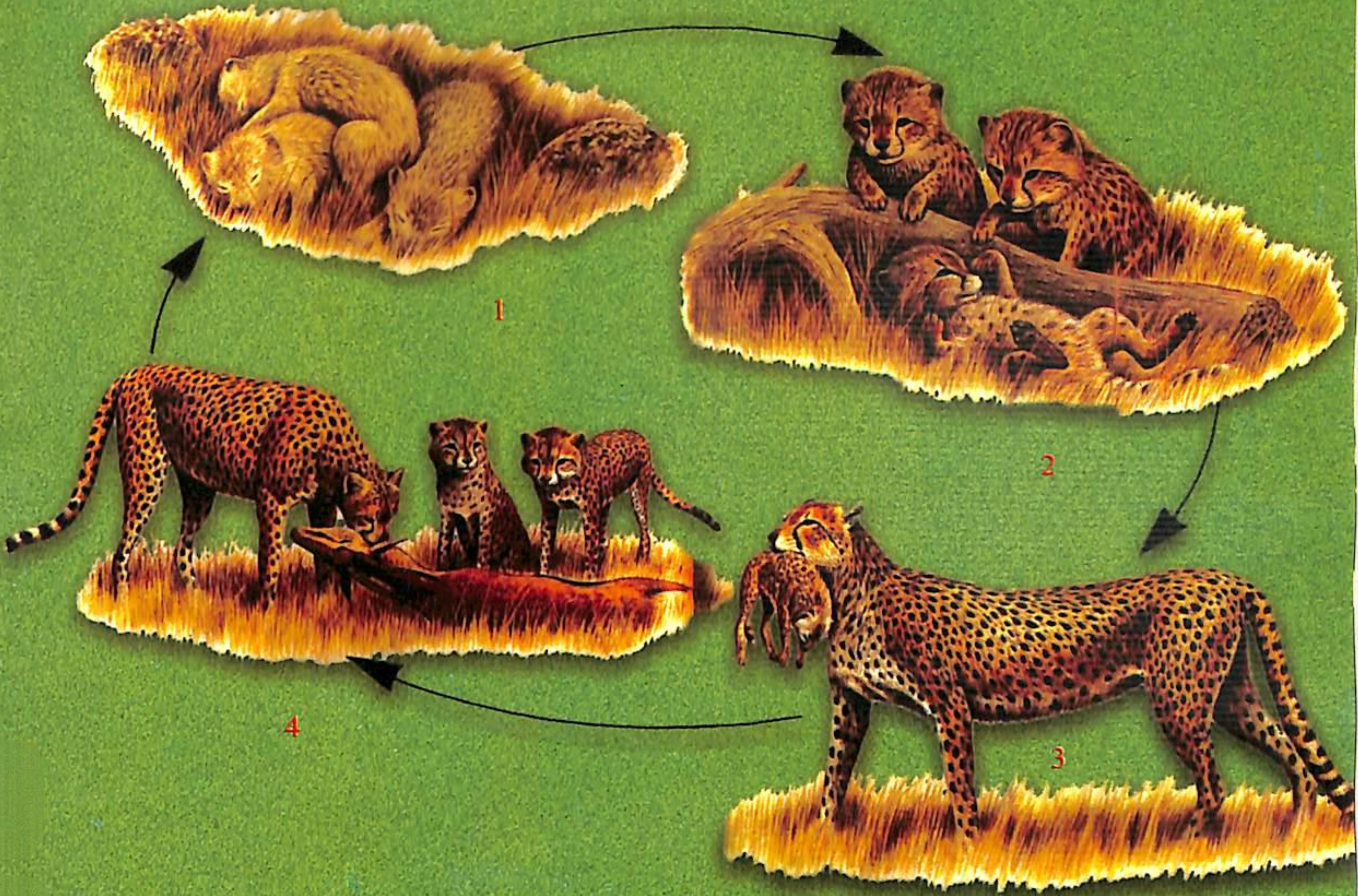

चीते का जीवनचक्रः एक नजर में

1. मादा चीता कहीं गुफा या माँद में बच्चों को जन्म देती है। जन्म के समय बच्चों की काफी परवरिश करनी पड़ती है। इस दौरान अन्य माँसाहारी जंतुओं का खतरा इनके सिर पर मँडराता रहता है।

2. दो सप्ताह के बाद बच्चों की आँखें खुलती है। और ये अपने कानों को खड़ा कर पाते हैं। इनके शरीर पर काले धब्बे दिखना प्रारंभ होते हैं।

3. मादा चीता अपने बच्चों को सुरक्षित रखने के लिए थोड़े-थोड़े दिनों में जगह बदलती है। इस दौरान यह बच्चों को एक-एक करके अपने मुँह में दबाकर ले जाती है। बिल्ली भी अपने बच्चों को जन्म के बाद एक घर से दूसरे घर में इसी प्रकार ले जाती है। अब आगे बिल्ली ऐसा करे तो ध्यान से देखना।

4. कुछेक हफ्ते बाद जब माँ शिकार करती है तो बच्चे भी उसका पीछा करते हैं। जब माँ शिकार को मार गिराती है तब वे उसके साथ-साथ माँस खाना सीखते हैं।

पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/2005-08

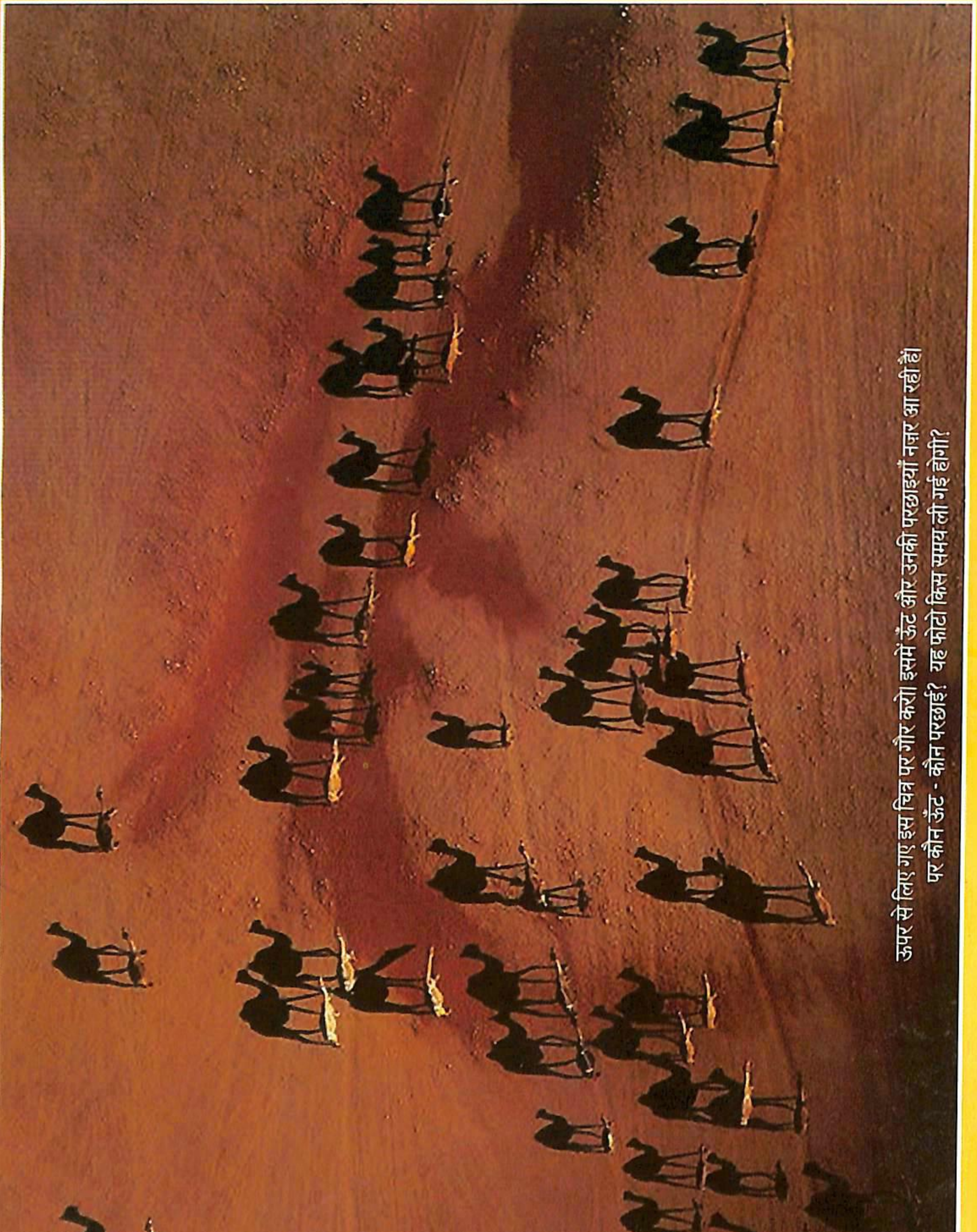

रैक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल प्रिंटर्स से मुद्रित एवं एकलव्य, ई-7/एच.आई.जी. 453, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 6 से प्रकाशित। संपादक : विनोद रायना